हिन्दी मासिक

ISSN No.: 2582-4007

मार्च 2020

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

करोगे जैसा मिलेगा वैसा

दुन्या तुमको मिली है प्यारे, उक़्बा के कुछ कर लो काम
करोगे जैसा मिलेगा वैसा, ना भूलो अंजाम
करो भलाई दुन्या में तुम, रहे बुराई दूर
अन्तिम नबी का कहना मानो, लो रब का तुम नाम

इदारा

वार्षिक ₹ 300/=

एक प्रति ₹ 30/=

COPYRIGHTS SANTABANTA.COM

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642 (Current A/c.)
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.
कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 0522–2740406 अथवा ई मेलः sachcharahi2002@gmail.com पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मार्च, 2020 वर्ष 19 अंक 01

सच्चा राही का लक्ष्य

वर्ष उन्नीसवां शुरु हुआ है सच्चा राही का
सत्य मार्ग पर चलते रहना लक्ष्य है सच्चा राही का
सच्ची सच्ची बातें लिखना पक्की पक्की बातें लिखना
दीन की अच्छी बातें लिखना लक्ष्य है सच्चा राही का
मानव में मानवता हो बुरे काम से घृणा हो
हर कोई याँ सज्जन हो लक्ष्य है सच्चा राही का
इल्मो हुनर याँ ख़ूब बढ़े, जड़ता की याँ जड़ कटे
छूत छात याँ रहे नहीं लक्ष्य है सच्चा राही का
आपस में न झगड़ा हो, आपस में न घृणा हो
प्रेम भाव की हवा बहे लक्ष्य है सच्चा राही का
संरक्षक इस का नदवा है, चालक इसका नदवा है
नदवे का पैग़ाम सुनाना लक्ष्य है सच्चा राही का

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
सच्चा राही उन्नीसवें वर्ष में	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	10
ख़िलाफ़ते राशिदा	मौलाना गुलाम रसूल मेहर	13
आज़माइश का दौर	मौ0 सै0 मु0 वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0	15
एलाने मिलकियत	इदारा	18
इस्लाम के मुक़ाबले में बीमार	मौ0 डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	19
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	24
कून्डे की रस्म	इदारा	28
अस्हाबे नबी सल्ल0 (पद्य)	इदारा	29
हक़ के मेअ़यार को सामने	मौ0 सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0	30
मायूसी नहीं अपने मक़ाम की	मौलाना शुमसुल हक़ नदवी	34
नमाज़ का महत्व	नसीम ग़ाज़ी	35
मौलाना बुरहानुद्दीन संभली	मौलाना मु0 गुफ़रान नदवी	36
देश के सभी देशवासियों	मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	38
हुक़ूक़ का बयान	सईदा सिद्दीक़ा फ़ाज़िला	39
तीन तलाक़ें यकजा देना (पद्य)	मौलाना मु0 गुफ़रान नदवी	40
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुरआन की शिक्षा

–मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अनआमः

अनुवाद–

आठ जोड़े (पैदा किए), भेड़ में से दो, बकरी में से दो, पूछिये कि क्या उसने दोनों नर हराम किये या दोनों मादा, या (वह बच्चा) जो दोनों मादा अपने मातृ गर्भ में लिए हुए हैं, अगर सच्चे हो तो प्रमाण के साथ मुझे बताओ(143) और ऊँट में से दो और गाय में से दो, पूछिए कि दोनों नर उसने हराम किये या दोनों मादा या (वह बच्चा) जो दोनों मादा अपने गर्भाशय में लिए हुए हैं, क्या तुम उस समय मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम को इसका आदेश दिया था तो उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो बिना जाने बूझे अल्लाह पर झूठ गढ़े ताकि लोगों को बहकाए, बेशक अल्लाह अन्याय करने वाले लोगों को राह नहीं देता(144) कह दीजिए कि मुझ पर जो वह्य आती है उसमें तो मैं खाने वालों के लिए कोई हराम चीज़ नहीं पाता जिसे वह खाए सिवाए इसके कि वह मुर्दार हो या बहता ख़ून हो या सुअर का गोश्त हो कि वह गंदगी है या पाप (का जानवर) हो जिस पर गैरुल्लाह का नाम पुकारा गया हो, फिर जो आख़िरी हद तक बेबस हो जाए इस तरह से कि न वह उसकी इच्छा रखता हो और न (हद से) आगे बढ़े तो आपका पालनहार बहुत माफ़ करने वाला है, बड़ा ही दयालु(1)(145) और यहूदियों पर हमने हर नाखुन वाले जानवर को हराम किया और गाय व बकरी की चरबी हराम की सिवाए उसके कि जो उन दोनों की पीठ या आंतों में हो या हड्डी के साथ लगी हुई हो, यह सज़ा हमने उनको उनकी अवज्ञा की वजह से दी और बेशक हम ही सच्चे हैं(2)(146) फिर अगर वे आपको झुठलाएं तो कह दीजिए कि तुम्हारा पालनहार तो बड़ी वसीअ़ (व्यापक) रहमत (दयालुता) वाला है और अपराधी लोगों से उसका अज़ाब टल नहीं सकता(3)(147) अब मुश्रिक लोग यह कहेंगे कि अगर अल्लाह चाह लेता तो न हम साझीदार ठहराते न हमारे बाप दादा और हम कुछ हराम भी न करते, इसी तरह उनसे पहले वाले भी (बहाने कर कर के) झुठला चुके हैं

यहां तक कि हमारे अज़ाब का मज़ा उनको चखना पड़ा, कह दीजिए कि क्या तुम्हारे पास कोई प्रमाण है कि उसको हमारे सामने निकाल कर ले आओ तुम तो केवल गुमान पर चलते हो और केवल अटकल मारते रहते हो(148) कह दीजिए कि प्रमाण तो अल्लाह का है जो दिलों को छू जाने वाला है तो अगर उसकी चाहत होती तो तुम सबको हिदायत दे देता[4](149) कह दीजिए अपने उन गवाहों को ले आओ जो गवाही देते हैं कि अल्लाह ने यह हराम किया है तो बस अगर वे गवाही दे भी दें तो आप उनके साथ गवाही न दें और उन लोगों की इच्छाओं पर न चलें जिन्होंने हमारी निशानियाँ झुठलाईं और जो आख़िरत पर विश्वास नहीं रखते और वे अपने पालनहार के बराबर ठहराते हैं[3](150) कह दीजिए आओ जो तुम्हारे पालनहार ने तुम पर हराम किया वह मैं तुम्हें पढ़ कर सुना दूँ, उसके साथ किसी को शरीक न करना, माता–पिता के साथ सद्व्यवहार करते रहना, उपवास के डर से अपनी संतान को क़त्ल मत कर देना, हम ही तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी और बे हयाईयों के निकट भी मत होना (चाहे वह) खुली हुई हों और (चाहे) छिपी हुई, और जिस जान को अल्लाह ने हराम किया हो, उसको नाहक़ क़त्ल मत करना, यह वह चीज़ है जिसकी उसने तुम को ताकीद कर दी है, शायद कि तुम बुद्धि का प्रयोग करो[6](131)

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. जो विवश हो जाए और अपनी जान का खतरा हो उसके लिए मुर्दार आदि इतना वैध है जितना काफ़ी हो, इसमें दो बातें कही गईं हैं एक तो यह कि वह मज़े के लिए न खाए दूसरे यह कि आवश्यकता से अधिक न खाए यानी सिर्फ़ इतना खाए कि उसकी जान बच जाए।

2. यानी जो चीज़ें जायज़ हैं वह शुरु से जायज़ चली आ रही हैं सिवाए उन चीज़ों के जो यहूदियों के बुरे कर्मों और लगातार नाफ़रमानियों की वजह से सज़ा के तौर पर उनके लिए हराम कर दी गईं जैसे ऊँट, शुत्रुमुर्ग़, बतख़ आदि हर खुर वाला जानवर जिसकी उंगलियाँ अलग अलग न हों या वह चरबी जो पीठ या आंतों में लगी हुई न हो।

3. अब तक उसकी कृपा से बचते रहे हो यह न समझना कि आगे अज़ाब टल ही गया।

4. अल्लाह ने दुन्या में दोनों रास्ते रखे हैं सत्य का और असत्य का और अपने पैग़म्बरों के द्वारा बन्दों को बता दिया कि यह रास्ता सत्य का है और यह

शेष पृष्ठ .....08...पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

जो शख्स अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों को कर बैठे तो उसको क्या करना चाहिएः–

कुर्आनी आयात का अनुवादः–

और अगर कभी उभार दे तुम को शैतान की छेड़ छाड़ तो अल्लाह से पनाह मांगो।

(सूरः आ़राफ़ रु–24)

बेशक जो लोग परहेज़गार हैं जहां उनको शैतानी वसवसा पैदा हुआ, वहीं वह चौंक पड़े और फौरन उनको समझ आ गई।

(सूरः आ़राफ़ रु–24)

और वह लोग जो बुरा काम कर बैठते हैं या जुल्म अपने हक में कर बैठते हैं तो वह अल्लाह को याद करते हैं और अपने गुनाहों की माफ़ी मांगते हैं और अल्लाह के सिवा कौन गुनाहों को माफ़ कर सकता है और वह लोग अपने गुनाहों पर जान बूझ कर इसरार नहीं करते यही लोग हैं जिन का बदला मग़फ़िरत उनके रब की तरफ़ से और बागात हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं और वह उसमें हमेशा रहेंगे क्या अच्छा बदला है काम करने वालों का।

(सूरः आले इमरान रु–14

और अल्लाह से सब लोग तौबा करो, ऐ ईमान वालो कि तुम कामयाबी पाओ। (सूरः नूर, रु–4)

हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया आदमी भूल कर ''लात व उज्जा'' (दो बड़े बुतों के नाम हैं) की कसम खा बैठे उसको चाहिए कि तुरंत ''ला इलाह इल्लल्लाह'' (अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं) कह दे, और जो अपने साथी से कहे कि आओ हम तुम जुवा खेलें तो तुरंत सदक़ा कर दे। (बुखारी–मुस्लिम)

क़यामत का बयान

दज्जाल का फितना और क़यामत की आमदः–

हज़रत नवास बिन समआन रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दिन दज्जाल का जिक्र फरमाया, गरज कुछ इस अंदाज़ से –अमतुल्लाह तस्नीम

आपने इस का जिक्र किया कि हम को अचानक यह खयाल पैदा हुआ कि शायद दज्जाल इसी जगह खजूरों के झुण्ड में छुपा है, फिर जब हम आपके पास गये तो आपने हमारी सूरत से हमारा हाल पहचान लिया और फरमाया तुम्हारा क्या हाल है हम ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपने कल दज्जाल का कुछ इस तरह जिक्र किया कि हम लोगों को यह गुमान हुआ कि दज्जाल इसी खजूरों के झुण्ड में छुपा है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मुझे तुम्हारे लिए दज्जाल से जियादा और बातों का खतरा है, दज्जाल अगर मेरी मौजूदगी में निकला तो मैं खुद उससे निपट लूंगा और तुम लोगों को उसके शर्र (खतरे) से बचाऊँगा और अगर मेरे बाद निकला तो मुसलमान खुद उससे निपट लेंगे और अल्लाह तआला हर मुसलमान का मेरे बाद निगहबान है।

दज्जाल की निशानियाँः–

देखो दज्जाल के घूँघर वाले बाल हैं और उसकी आँख में ठेंठ (फुल्ली) है, वह अब्दुल उज़्ज़ा बिन कुतुन की तरह है जो शख्स उसको देखे वह सूरः कहफ के शुरु की आयतें पढ़े और सुनो वह मुल्के शाम व इराक़ की मध्य जगह से निकलेगा और दायें बायें फसाद फैलाता हुआ आयेगे, ऐ अल्लाह के बन्दो ईमान पर जमे रहना, हमने अर्ज किया या रसूलुल्लाह वह जमीन पर कितने दिन ठहरेगा, आप ने फरमाया चालीस दिन, उनमें एक दिन एक साल के बराबर होगा, दूसरा दिन एक महीने के बराबर, तीसरा दिन हफ्ते के बराबर, बाकी दिन तुम्हारे दिनों के बराबर, लोगों ने अर्ज किया हुजूर जो दिन एक साल के बराबर होगा उसमें हमारी एक दिन की नमाज़ काफी हो जायेगी, आप ने फरमाया नहीं, तुम अंदाजा लगा कर नमाज़ पढ़ना, फिर अर्ज किया, दज्जाल की रफतार क्या होगी? आप ने फरमाया उसकी रफतार उस बादल की तरह होगी जिस को हवा उड़ाती है, फिर वह एक कौम के पास आयेगा और उनको अपने दीन की दावत देगा, वह लोग उसकी दावत कबूल कर लेंगे तो वह आसमान को हुक्म देगा कि उन पर बारिश बरसा दे, सो खूब बारिश होगी, फिर ज़मीन को हुक्म देगा तो वह खूब हरी भरी हो जायेगी और उनके जानवर सायं तक चर कर खूब मोटे ताजे हो जायेंगे, फिर दज्जाल दूसरे लोगों के पास जायेगा और उनको भी अपने दीन की दावत देगा लेकिन वह उसकी दावत को ठुकरा देंगे तो उन पर कहतसाली होगी, माल–दौलत से खाली हो जायेंगे, और वह वहां से भी चल देगा।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा.....

रास्ता असत्य का है अब मानना न मानना बन्दों का काम है अल्लाह की ओर से हुज्जत पूरी हो चुकी।

5. अल्लाह ने जो हराम ही नहीं किया उस पर हराम होने की गवाही कौन दे सकता है सिवाए अशिष्ट झूठ गढ़ने वाले के, अगर ऐसे लोग झूठी गवाही दे भी दें तो उनकी बात स्वीकार करने के योग्य कब है, आगे उन चीज़ों का बयान है जिन को अल्लाह ने हराम किया और मुश्रिक उनमें लिप्त रहे।

6. निर्धनता के भय से संतान को क़त्ल करना उनमें साधारण बात थी, हक़ के साथ यह है कि हत्यारे से किसास (बदला) लिया जाए या विवाहित बलात्कार करे तो उसको पत्थर बरसा कर मार डाला जाए या कोई इस्लाम धर्म से फिर जाए तो उसकी सज़ा भी क़त्ल है।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

सच्चा राही उन्नीसवें वर्ष में

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

अल्हमदुलिल्लाह सच्चा राही ने अट्ठारह वर्ष पूरे कर लिए और इस अंक पर उन्नीसवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। अट्ठारह वर्षों की इसकी सेवाएं कैसी रहीं इस का निर्णय पाठकों के हाथ में है वैसे हम पाठकों के परामर्श माँगते रहे हैं और पाते रहे हैं, हम चाहते हैं कि ''सच्चा राही'' ने अपने इदारे के बुज़ुर्गों जैसे जनाब मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी साहब नाज़िम नदवतुल उलमा, जनाब मौलाना डॉक्टर सईदुर्रहमान आज़मी नदवी साहब, मोहतमिम दारुल उलूम और जनाब मौलाना सय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी साहब नायब नाज़िम नदवतुल उलमा आदि के लेख सच्चा राही में प्रकाशित करें परन्तु ये हज़रात हिन्दी में नहीं लिखते अलबत्ता इनके और दूसरे उलमा के लेख उर्दू में तामीर हयात में आते हैं हम तामीर हयात से इन लेखों को ज्यूँ के त्यूँ हिन्दी लिपि में लिखवा कर सच्चा राही में प्रकाशित करते हैं, वैसे हमारे सहायक सम्पादक जनाब मौलाना सय्यद मुहम्मद गुफरान नदवी साहब भी कुछ न कुछ लिखते रहते हैं इस वक़्त वो ख़िलाफते राशिदा पर लिख रहे हैं। जनाब मौलाना जमाल अहमद नदवी साहब जो सच्चा राही की प्रूफ रीडिंग करते हैं वह जनाब मौलाना बिलाल हसनी नदवी साहब की तफ़सीर से सच्चा राही के लिए कुछ भाग शीर्षक ''कुर्आन की शिक्षा'' हर महीने प्रस्तुत करते हैं और प्यारे नबी की प्यारी बातें लिखते हैं, आपके प्रश्नों के उत्तर जनाब मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आ़लम नदवी साहब के होते हैं परन्तु हिन्दी क़लम जनाब हुसैन अहमद साहब का होता है। जनाब क़मरुज़्ज़मा साहब पर्चे की कम्पोज़िंग करते हैं। जनाब मौलाना नियाज़ अहमद साहब की तवज्जो से पर्चा वक़्त पर छपता है और जनाब मुबीनुद्दीन नदवी साहब, जनाब मंजर सुबहानी और अ़ज़ीज़म अरशद के प्रयासों से पर्चा वक़्त पर पोस्ट हो जाता है। हम इन तमाम हज़रात का शुक्रिया अदा करते हैं उनके लिए दुआएं करते हैं और उनसे दुआ़एं चाहते हैं। जनाब मौलाना सय्यद मुहम्मद ह़मज़ा हसनी नदवी साहब नाइब नाज़िम नदवतुल उलमा और जनाब हज़रत नाज़िम साहब नदवतुल उलमा की तवज्जो और दुआओं से पर्चा बराबर प्रकाशित हो रहा है और इन्शाअल्लाह प्रकाशित होता रहेगा। पाठकों की जानकारी के लिए ये सब बातें लिख दीं।

प्रिय पाठको! आप लोगों में से जो सज्जन हिन्दी में लेख लिखने की योग्यता रखते हैं वह सच्चा राही के लिए अवश्य लिखें ये सवाब का काम है। विशेष कर विज्ञान के छात्रों से अनुरोध है कि वह सच्चा राही के लिए विज्ञान की बातें अवश्य लिखें उनके लिए बहुत से शीर्षक हैं ''जैसे मधुमक्किखयों का प्रबन्ध'' चीटियों का जीवन'' पक्षी जगत आदि।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

नबूवत (दूतकर्म)का असल कारनामा

नबूवत के समापन का एलान इस उम्मत की हिफाज़त व बक़ा की जमानत लेता है:–

आप इतिहास का अध्ययन करें। हमने अल्हम्दुलिल्लाह (अल्लाह का शुक्र है) इतिहास का अध्ययन खूब किया है। और हमें इसकी अपने लिखने–पढ़ने के कामों में बराबर ज़रूरत भी पड़ती रहती है। हमने यहूदी व इसाई धर्म की प्रमाणिक पुस्तकें भी पढ़ी हैं। आपको साफ नज़र आयेगा कि इन का पूरा इतिहास ज्वार–भाटा व उतार चढ़ाव का इतिहास है, पूरब–पश्चिम का इतिहास है, प्रेम और मतभेद का इतिहास है। अक़ायद में मतभेद, अरकान के अदा करने में मतभेद। यह जो मैं आपसे कह रहा हूं मात्र उम्मत का एक व्यक्ति होने के नाते नहीं, इतिहास व धर्मों का अध्ययन रखने वाले की हैसियत से भी। जरा आप भी अध्ययन कीजिए, फ्रेंच की किताबें पढ़िये, जर्मन किताबें पढ़िये, इंग्लिश किताबें पढ़िये, धर्मों के इतिहास का अध्ययन कीजिए। धर्मों का इतिहास लिखा गया है। आप इन इतिहासकारों को इसका एक़रार करते नहीं बल्कि शर्म से मानो मुँह पर हाथ रखते हुए बल्कि ऐसे हीन भावना के साथ इस हक़ीकत को बयान करते हुए देखेंगे और आप देखेंगे कि इस्लाम से पहले के धर्मों में से कोई भी धर्म ऐसा नहीं है कि उसके पैगम्बर ने जिस तरह एलान किया और जो बातें बताई वह धर्म उनकी बताई हुई शिक्षाओं के अनुसार सदियों चलता रहा हो। सदियों क्या बल्कि कभी तो आधी सदी और दहाइयों तक चलना मुश्किल हो गया।

इन धर्मों का इतिहास बताता है कि वहां ख़त्मे नबूवत (नबियों के आने के क्रम की समाप्ति) का एलान नहीं किया गया था। यह कहीं नहीं मिलता है इन धर्मों को जो लोग सच्चा मानते हैं और इन पर पूरा यक़ीन रखते हैं और गर्व रखते हैं वह भी जहाँ तक हमारी मालूमात हैं इनमें से किसी ने यह दावा नहीं किया कि नबी व रसूल ने अपने अंतिम नबी होने का दावा किया हो। किसी ने भी ऐसा नहीं किया। न ही अल्लाह की तरफ़ से ऐसा ऐलान हुआ।

आप इन तमाम धर्मों के इतिहास में पढ़ेंगे, तनिक उदारता के साथ आप देखें तो आपको साफ नज़र आयेगा कि इनमें केवल विरोधाभास ही नहीं वरन् टकराव पाया जाता है, यह धर्म आरम्भ में यह कहता था और अब यह

कहता है। इस मज़हब के पेशवा अगर यह न कहें तो कम से कम एहतियात के लिए यह कहते हैं। इस मज़हब के पेशवा और प्रवक्ता तथा इसके प्रामाणिक पंडित पहले यह कहते थे, अब उनकी राय वह नहीं यह है, इबादत यह है, नहीं यह इबादत नहीं थी बिदअत है। यह साबित है, नहीं यह साबित नहीं मफरूजः (मान लिया गया) है। आप देखेंगे कि इन धर्मों में अक़ीदों (विश्वासों) का मतभेद मिलेगा, अरकान का स्तम्भों का मतभेद मिलेगा, ज़माने के साथ वह बदलते रहेंगे। युग के कारण भी और स्थान की वजह से भी मतभेद मिलेंगे। इसके आपको साफ–साफ नमूने मिलेंगे। ऐसे नमूने कि इस मज़हब के प्रचार का जो दायरा और क्षेत्र है, जो इसकी दुन्या है उसके किसी हिस्से में कुछ हो रहा है, किसी हिस्से में कुछ। यह सब इसका नतीजा था, कि वहाँ, ख़तम नबूवत का ऐलान नहीं हुआ था, उन लोगों के लिए इसका मौका था, और गुंजाइश थी, वैध और अवैध की सम्भाविक गुंजाइश थी कि वह जो चाहें दावा करें। आज यह बात क्यों है कि सारी दुन्या की क्रान्तियों के बावजूद सियासी इन्क़लाब भी, सामूहिक और नैतिक क्रान्तियाँ भी, यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अभ्योदय से पहले नहीं पेश आयीं। यह इतिहास की गवाही है। इससे कोई इनकार नहीं कर सकता। ज्ञान–विज्ञान की क्रान्ति के साथ, तरक्क़ी के साथ, शोध कार्य के साथ, नई–नई खोज के साथ, नये नये फायदे हासिल होने की उम्मीद के साथ, जो इसमें परिवर्तन करने और नया दीन और नया अक़ीदा पेश करने से हो सकते हैं, यह जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अभ्युदय के बाद हुआ है, इसके पहले कभी नहीं हुआ। मैं इतिहास के जानकार की हैसियत से कहता हूं कि इसकी कोई मिसाल नहीं मिलती।

लेकिन इसके बावजूद यह दीन अब तक चला आ रहा है। नबी और रसूल जो गुज़र गये हैं, उन पर ईमान बाक़ी है। अभी भी अल्लाह की बरतरी, उसकी कुदरत और शान है कि जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो बस उसका यह कहना कि हो जा तो वह चीज़ हो जाती है, और उसकी ज़ात की वहदत (एकता) है कि पूरे आलम का चलाने वाला वही है। इन सब के बावजूद यही एक चीज़ है जो अभी तक बुन्यादी अक़ायद पर क़ायम है, मैं उन चीज़ों को नहीं कहता जो किसी ने अपने सांसारिक लाभ के लिए या किसी रिशवत के नतीजे में या किसी फायदे के लिए, मान सम्मान के सिलसिले में पैदा कर दिया, दीन में वह चीज़ बिल्कुल नहीं चलने पाई। आज तक दीन बिल्कुल साफ़ और रौशन मौजूद है। और सब जानते हैं कि अगर नीयत ख़राब नहीं है और ख़ुदा का डर अगर किसी दर्जे में बाक़ी है तो वह बिदअत और

सुन्नत को समझता है वह सुन्नत है और यह बिदअत है, बिदअत को कोई भी सुन्नत साबित नहीं कर सकता, गुनाह को कोई भी इबादत साबित नहीं कर सकता, शिर्क को कोई तौहीद साबित नहीं कर सकता। कोई अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता) का ऐसा तरीक़ा, जिसमें रस्म व रिवाज की बू आती हो, दुन्यावी फायदा हो, नहीं जाना जा सकता। यह किस बात का नतीज़ा है, यह नतीजा है ख़त्म नबूवत के ऐलान का।

आज आप योरोप व अमेरिका के आख़िरी सिरे तक चले जाइये क्षमायाचना के साथ कहता हूं कि कम लोगों को इतने भ्रमण का इत्तफ़ाक़ हुआ होगा जितना हमें हुआ। इसमें हमारी योग्यता को दख़ल नहीं यह केवल अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) व इनाम है कि कम से कम इस्लामी दुन्या को ले लीजिये, गैर इस्लामी दुन्या की भी हमने ख़ूब सैर की है, योरोप, अमेरीका व अफ्रीका सब हमने देखे हैं। इस्लामी दुन्या का तो शायद ही कोई कोना हमसे बचा हो, मोरक्को के अन्तिम छोर तक मैं गया हूँ, और फिर इसके बाद ताशक़न्द व बुख़ारा और समरकन्द भी जाना हुआ है, वहां नमाज़ें भी पढ़ी हैं, बुजुर्गों के मज़ारों की ज़ियारत भी की है, इसके अलावा अरब दुन्या का कोई मुल्क नहीं जहाँ मैं न गया हूँ। ईराक, सीरिया, मिस्र, लीबिया, जार्डन, तुर्की, खाड़ी का इलाक़ा और सिर्फ एक मुल्क ही नहीं शहर–शहर गया हूँ लेकिन कोई जगह ऐसी न पाई जहाँ दीन की बुन्यादी बातों में फर्क पाता। यहाँ दीन के अरकान (स्तम्भ) कुछ हों, वहां कुछ हों। नमाज़ पढ़ी भी और अल्लाह के फज़्ल से पढ़ाई भी, लेकन इसके लिए हमें कोई गाइड बुक तक नहीं दी गई कि आप नमाज़ें पढ़ाने जा रहे हैं, यहाँ आपके मुल्क की तरह नमाज़ नहीं होती यहाँ वजू के बाद यह यह करना और पढ़ना होता है, यहाँ खड़े हो कर एक ख़ास दुआ पढ़नी होती है, यहाँ दीवारों पर यूँ हाथ लगाना होता है, यहां नमाज़ शुरु करने से पहले यह शब्द कहने पड़ते हैं, विशेष प्रकार की शिक्षा देनी पड़ती है कुछ कहना पड़ता है अगर क़ब्र है तो उसके आगे झुकना पड़ता है, बेजान से आवश्यकता पूरी करनी पड़ती है। यह कितना विशाल संसार है। चप्पे–चप्पे पर मुसलमान आबाद हैं लेकिन एक तरह की नमाज़ हर तरफ हो रही है। जा कर आप कहीं देख लीजिए। अफग़ान्सितान, तुर्किस्तान, इंग्लैंड, मोरक्को, मिस्र, स्पेन, रूस, चीन और जापान कहीं चले जाइये, इधर लीबिया, सूडान जा कर देख लीजिए, आप इतमीनान से नमाज़ पढ़ सकते हैं। ख़ुदा के फज़्ल से यह सम्मान व प्रतिष्ठा भी हमें हासिल हुई मगर किसी ने कुछ कहने की ज़रूरत न समझी और हमने कुछ पूछने की, वक्त हुआ तो कहा गया आगे बढ़िये, आगे गया, बाद में भी किसी को कोई शंका, ऐतराज नहीं हुआ और न कोई कमी लगी।

जारी..... ◆◇◆

ख़िलाफ़ते राशिदा

—मौलाना गुलाम रसूल मेहर

—प्रस्तुतिः मु0 गुफ़रान नदवी

ख़लीफ़-ए-रसूल हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0

बादे वफ़ात हज़रत अली रज़ि0 का बयानः–

ऐ अबू बक्र ख़ुदा आप पर रहम करे वल्लाह आप सबसे पहले इस्लाम लाये और सबसे ज़ियादा आपका ईमान मुकम्मल था, आपने उस वक़्त रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ग़म ख़ुवारी की जब दूसरों ने बुख्ल (कंजूसी) की, न आपकी महब्बत बेराह हुई, न आपकी बसीरत (हृदय दृष्टि) में कमी आई, न आपके नफ़्स ने कभी बुज़दिली दिखाई, आप पहाड़ के समान जमे रहे, तेज़ हवायें न आपको उखाड़ सकीं आप ही के बारे में रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था ''बदन के कमज़ोर, ईमान के क़वी शक्तिशाली, तबीयत के नर्म, अल्लाह के नज़दीक बुलन्द मरतबा, ज़मीन पर बुज़ुर्ग, मोमिनों में बड़े, आपके सामने किसी को लालच नहीं हो सकती थी कमज़ोर आपके नज़दीक ताक़तवर था, ताक़तवर आपके नज़दीक कमज़ोर था, यहाँ तक कि कमज़ोर का हक़ दिलाते।''

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने पूरा माल राहे ख़ुदा में दे दिया था, मदीना मुनव्वरा में गुज़ारे का साधन तिजारत था। ख़लीफ़ा बने तो गुजारे के लिए साधारण वज़ीफ़ा मुक़र्रर हुआ। वफ़ात से पहले उसका हिसाब कराया और वसीयत की कि मेरी ज़मीन बेच कर पूरी रक़म बैतुल माल में वापस कर दी जाये, सरकारी चीज़ों में से उनके पास 2 ऊँटनियां थीं, फरमाया ''वफ़ात के बाद उन्हें उमर रज़ि0 के पास भेज दिया जाये।

वसीयत की, कि जो चादरें पहन रखी हैं उन्हें धो कर कफ़न दिया जाये, हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा ''अब्बा जान! हम इतने ग़रीब नहीं कि नया कफ़न भी न ख़रीद सकें? फ़रमाया ''बेटी! नये कपड़ों की ज़रूरत जिन्दों को है, मेरे लिए यही पुराने कपड़े काफ़ी हैं''। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पहलू में दफ़न हुए, वह इस तरह की हज़रत अबू बक्र रज़ि0 का सर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दोशे मुबारक (कन्धे) के बराबर रखा गया।

ख़िलाफ़त का ज़मानाः–

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 की ख़िलाफ़त पूरे तौर पर जमहूरी थी, हर मुआमले में अच्छी समझ बूझ रखने वालों से मशवरे लेते थे।

उस समय तक हुकूमत केवल अरब में सीमित थी, आप रज़ि0 ने पूरे देश को सूबों और ज़िलों में बाँटा, और हर जगह के लिए बेहतरीन हाकिम नियुक्त किया, जब किसी व्यक्ति को कोई काम सौंपते तो उसके कर्तव्य बताते, अच्छी नसीहतें भी करते और उसकी कार करदगी की निगरानी भी फ़रमाते, माली इन्तिज़ाम (अर्थव्यवस्था) का स्रोत वही रहा जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक ज़माने में था। जो रकम आती उसे सब में बराबर बाँट देते। एक बार एक व्यक्ति ने बराबर के हिस्से पर एतिराज़ किया, खलीफ़–ए–रसूल ने फ़रमाया कि निजी बड़ाई और चीज़ है, उसे रिज़्क़ की कमी बेशी से क्या सम्बन्ध?

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 मदीना मुनव्वरा के पास एक गाँव में रहते थे, महीनों यह नियम रहा कि सुब्ह के समय पैदल गाँव से आते, मस्जिद में बैठ कर शासन करते, शाम को पैदल घर चले जाते, आख़िरी ज़माने में बैतुल माल (कोषागार) बनवाया, लेकिन उसमें रक़म जमा न होने पाती, आते ही सब कुछ बाँट देते।

सैनिक व्यवस्था वही रही जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक ज़माने में थी, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने यह तरीक़ा अपनाया था कि जब सेना किसी मुहिम (अभियान) पर जाती तो उसे छोटी छोटी टुकड़ियों में बांट कर हर टुकड़ी का अलग अलग अधिकारी बना देते, एक व्यक्ति को सेनापति का पद देते।

छावनियाँ भी बना दी थीं और ज़रूरी हथियार भी ख़रीदते रहते थे।

इस्लामी सेना का कार्यक्रमः–

मुल्क शाम पर फ़ौजें भेजीं तो उनको जो नसीहते फ़रमाईं वह इस्लामी फ़ौज के लिए हमेशा के वास्ते दस्तूरे अमल बन गईं, फ़रमाया ''तुम को दस वसीयतें करता हूँ–

1. किसी औरत, बच्चे या बूढ़े को क़त्ल न करना।
2. फलदार पेड़ को कभी न काटना।
3. किसी आबाद जगह को वीरान न करना।
4. खाने की ज़रूरत के अलावा, बकरी, गाय और ऊँट को कभी ज़बह न करना।
5. नख़लिस्तान (खजूर का बाग़) न जलाना।
6. माले ग़नीमत में ख़यानत न करना।
7. बुज़दिल (कायर) न बनना।
8. जब किसी क़ौम पर से गुज़र हो तो नर्मी से उसे इस्लाम की तरफ़ बुलाना।
9. यहूदियों और ईसाइयों में से जो लोग सांसारिक संबंधों से अलग हो कर इबादत में लगे हुए हैं, उन्हें कुछ न कहना।
10. जब खाना तुम्हारे सामने आये, तो अल्लाह का नाम ले कर शुरु करना।

शेष पृष्ठ .....37...पर

आज़माइश का दौर

—मौ0 सय्यिद मु0 वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0

—हिन्दी लिपिः फ़ौज़िया सिद्दीक़ा

इस वक़्त जो भी आलमे इस्लाम के हालात का जाइज़ा लेगा वह यक़ीन के साथ कह सकता है कि इस्लामी बेदारी पहले के मुक़ाबले में कहीं ज़ियादा है, इस का अंदाज़ा मुस्लिम तनज़ीमों की सरगर्मियों से लगाया जा सकता है, अगरचि वह गैर मुनज़्ज़म हैं, यह बेदारी महज़ ख़्वाब या ख़ाम ख़यालि नहीं है बल्कि इस वक़्त यह बेदारी तजरिबा और इमतिहान के मरहले से गुज़र रही है। इसी वजह से दुश्मनाने इस्लाम और उनके हम नवा परेशान हैं और इस कोशिश में लगे हुए हैं कि इस्लामी बेदारी के सारे रास्ते बंद और सोते ख़ुश्क कर दिये जाएं। लेकिन उनकी यह कोशिश कि इस बेदारी को रोक दें और इस्लामी ज़मीर व शऊर को मुर्दा कर दें। उसी तरह नाकाम होगी जैसे माज़ी में उनकी कोशिशें नाकाम हो चुकी हैं। जबकि उन्होंने मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत की आग भड़काई उनकी तारीख़ को मस्ख़ किया, उनमें जिहालत आ़म की, मुस्लिम बच्चों की सहीह इस्लामी तालीम व तरबीयत के निज़ाम को ख़त्म करने की कोशिश की और उनको ख़ुद कफील होने से रोक दिया।

यह कोशिशें जो इल्म व फ़न और बहसो तहक़ीक़ के नाम पर शुरुअ़ की गई थी और हुकूमत की हिमायत भी हासिल थी, इस्लामी बेदारी को रोकने में नाकाम रहीं और उनकी तमाम दाख़िली और ख़ारजी साज़िशें एक अधूरा ख्वाब बन कर रह गईं और इस्लाम ग़ालिब रहा और अब योरोप में भी इस्लाम को मक़बूलियत हासिल हो रही है, उसकी नुमायां दलील वह जगह जगह मसाजिद और इस्लामी मराकिज़ का क़ियाम है। इस्लामी बेदारी को रोकने की कोशिश ख़ुद इस बात की दलील है कि इस्लाम एक ताक़तवर और ज़िन्दा मज़हब है, तो दूसरी तरफ़ इस्लामी मुमालिक में इस्लामी शरीअ़त को नाफ़िज़ करने की कोशिश भी हो रही है।

यही वह मुमालिक हैं जो निज़ाम तालीम व तरबीयत तहज़ीब व तमद्दुन और ज़राये इबलाग़ के इस्तेमाल में योरोप के नक़शे क़दम पर चल रहे हैं और मीडिया को खुले आ़म जहर फैलाने की छूट दे रखी है, मग़रिबी तहज़ीब को सराह रहे हैं और उसके इन्सानी जराइम को छुपा रहे हैं। इस्लामी बेदारी से तवज्जुह हटा रहे हैं। बल्कि इस्लामी तहरीक को कुचल रहे हैं, उम्मत की नागवारी व नाराज़गी के बावजूद मुख़ालिफ़ ताक़तों

को गले लगा रहे हैं और इस्लाम पसंदों की नक़्ल व हरकत पर क़दग़न लगाई जा रही है, अफ़्सोस की बात तो यह है कि दुशमनों को मुसलमानों ही में से ऐसे अफ़राद मिल रहे हैं जो उनके मक़ासिद को पूरा कर रहे हैं।

इस्लाम के ख़िलाफ़ मख़सूस अहले फ़िक्रो फ़न की आवाज़ों पर मिल्लत कोई तवज्जुह नहीं देती और बदलते हुए हालात और इस्लामी जज़्बे से भरा हुआ माहौल उनके मुवाफ़िक़ भी नहीं, अगर उनको इस्लामी मुमालिक के नाम निहाद मुस्लिम हुक्काम की पुश्त पनाही हासिल न होती और इस्लाम पसंदों के ख़िलाफ़ जारिहाना कारवाईयां न होतीं तो बीमार ज़ेहनियत के हामिल रौशन ख़याल और बिके हुए क़लम यह जुर्अत न कर पाते कि मुस्लिम अकसरीयत के दीन, तहज़ीब और तारीख़ के खिलाफ़ एक लफ़्ज़ भी निकालें और अगर योरोप के ताबेअ़ निजामहाए हुकूमत की हिमायत व ताईद न होती तो मुस्लिम क़ौम की नाराज़गी, उसकी दीनी ग़ैरत व ह़मीयत उन तुफ़ैली अक़्लों को सबक़ सिखा देती।

आलमे इस्लाम में तुफैली अ़क़्ल का अहद ख़त्म हो गया है, इसमें कोई शक नहीं कि मग़रिब के ग़लबे के बाद क़ाइम होने वाले निज़ाम हुकूमत साम्राज्य का आल–ए–कार थे, और सियासी व इक़्तिसादी निज़ाम और समाजी फ़लसफ़ों ने आलमे इस्लाम को इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार और गुलामी के अलावा कुछ नहीं दिया और आज आलमे इस्लाम में जो इन्तिशार व इफ़्तिराक़ और टकराव नज़र आ रहा है, वह मग़रिब के सियासी और फ़िकरी सामराज्य का नतीजा है।

ख़तरे की बात यह है कि नाम निहाद इस्लामी मुफक्किरीन जो मग़रिबी ज़ेहनीयत के मालिक हैं इस्लाम मुख़ालिफ़ अफ़्कार का नमूना पेश कर रहे हैं, नौख़ेज़ क़लम कारों से ऐसी किताबें लिखवाई जा रही हैं जो किताब व सुन्नत से हट कर इस्लाम की तौज़ीह व तशरीह पेश करती हैं और इस का मक़सद इस्लाम को अन्दर से कमज़ोर करना है, जिसकी बिना पर ऐसे ऐसे वाक़िआ़त पेश आ रहे हैं जो फ़ितना व फ़साद का बाइस हो रहे हैं और इस्लामी मुआ़शरे में इस्तेहकाम और इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ की फ़ज़ा हमवार करने की राह में रोड़ा बन रहे हैं।

आलमे इस्लाम क़ुदरती ज़ख़ाइर व मआ़दनयात से माला माल हैं, अहम आलमी गुज़रगाहें इसी में हैं उसको जुग़राफ़ियाई और इस्ट्राटेजिक पोज़ीशन हासिल है, ज़बर्दस्त अफ्रादी ताक़त का मालिक है, और उसके फ़रजन्द अ़ज़ीम सलाहियतों के मालिक हैं। इस सब की बुन्याद पर वह सिर्फ़ रूस व अमरीका ही पर नहीं, बल्कि पूरी दुन्या पर इसराईल से ज़ियादा असर

अन्दाज़ हो सकता और अपनी बात मनवा सकता है। लेकिन आपसी इख्तिलाफ़ और हुकूमत और क़ौम के दरमियान हाइल ख़लीज ने इस पर पानी फेर दिया है। अब वक़्त आ गया है कि हुक्काम और क़ौम के दरमियान दूरियां ख़त्म हों, आपसी इख़्तिलाफ़ दूर करें और एक दूसरे के मुआविन हो जाएं। और अ़वाम की तरह क़ाइदीन में भी बेदारी पैदा हो और उनको अपने ह़क़ीक़ी दोस्त व दुश्मन की पहचान हो जाए। अगर मुस्लिम क़ौम ऐसा करे तो दुश्मनों के सारे सहारे ख़त्म हो जाएं और उन बड़ी ताक़तों के अस्ल चेहरे से पर्दा उठ जाए जिन पर इस्लामी मुमालिक भरोसा करते हैं और इस्लाम मुख़ालिफ़ निज़ाम व नज़रियात ख़त्म हो जाएं सारी साज़िशें और हथ कंडे नाकाम हो जाएं, सारे फलसफे किसी काम के न रह जाएं और फिर अवाम और इस्लामी और अरबी हुकूमतों के सामने कोई चारा न रह जाए सिवाये अपनी हक़ीक़त और असलीयत की तरफ़ वापस आ जाएं और अगर ऐसा नहीं किया तो उन का अंजाम भी माज़ी की भूली बिस्री क़ौमों की तरह होगा। अब वक़्त आ गया है कि इस्लामी मुमालिक फैसला करें कि वह आज़ादी की ज़िन्दगी गुज़ारना चाहते हैं, या माज़ी क़रीब के मुमालिक महरूसा की तरह रहना चाहते हैं जिसका सिलसिला ख़िलाफते उस्मानिया के सुकूत के बाद शुरुअ़ हुआ था? सलीबी ग़लबा और मुसलमानों पर योरोपी मुल्कों की बालादस्ती का सबब उन में दीनी रूह की बेदारी थी और यह एहसास था कि अगर वह नहीं जागे तो मुसलमान उन को ख़त्म कर देंगे। दूसरी तरफ़ योरोप और पादरियों ने ईसाइयों में इंतिकाम की रूह फूंक दी और पूरे योरोप को मुसलमानों पर ग़लबा हासिल करने के लिए हर मैदान में कोशिश की, चुनांचि पूरा योरोप मज़हब के नाम पर मुत्तहिद हो गया।

मुसलमान वह उम्मत हैं जिस में सब से ज़ियादा इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ और यकजेहती और यगानगत होनी चाहिए, इस लिए कि उनकी इबादत भी इत्तिहाद का मज़हर है जिस का नमूना मसाजिद पेश करती हैं और हज तो उसका बेहतरीन नमूना है कि मुसलमान इस इबादत की अदाएगी में एक लिबास में मलबूस होते हैं। उनका शिआ़र एक होता है, एक ही एहसास के साथ एक ख़ुदा की किबरियाई बयान करते हैं। और ख़ुदाए वाहिद लाशरीक़ लहू को बयक आवाज़ पुकारते हैं, फिर उनके दर्मियान यह इख़्तिलाफ़ क्यों?

मुसलमानों का तरज़े ज़िन्दगी और उनके मुआ़मलाते ज़िन्दगी वहदत से इबादत है, मुसलमानों को हर मुआ़मले में बाहमी मशवरे की तलक़ीन की गई है। अफ़्व दरगुज़र,

एलाने मिलकियत व अन्य विवरण फार्म-4 नियम-8

प्रकाशन का स्थान	–	नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ–7
प्रकाशन अवधि	–	मासिक
सम्पादक	–	हारून रशीद
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	दारुल उलूम, नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ–7
मुद्रक एवं प्रकाशक	–	अतहर हुसैन
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	दारुल उलूम, नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ–7
मालिक का नाम	–	दारुल उलूम नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ–7

मैं, अतहर हुसैन प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।

हिल्म व बुर्दबारी सब्र व ज़ब्त, तहम्मुल व बर्दाश्त, ईसार व क़ुर्बानी मुसलमानों के औसाफ़ बताए गये हैं। चुनांचि मुसलमान ज़ियादा हक़दार थे कि वह वहदत को अपना शिआ़र बनाते, ज़िन्दगी के तमाम शोअ़बों में वहदत जलवा अफ़रोज़ होती लेकिन आज मुसलमानों का हाल यह है कि उनमें सब से ज़ियादा आपसी इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार, इनाद व दुश्मनी, बुग्ज व ह़सद, जंगो जिदाल और इन्तिक़ाम का जज़्बा पाया जाता है, यह खुला तज़ाद है जो इस्लाम की रूह के मनाफ़ी है।

आज ज़रूरत इस बात की है कि मुस्लिम क़ाइदीन अपने अन्दर ख़ुद एअ़तिमादी व ख़ुदी पैदा करें, ग़ुलामी के तौक़ से निकल कर आज़ादी की फ़ज़ा में सांस लें, नए सामराज्य के चन्गुल से निकल कर इस्लामी तशख़्ख़ुस और इस्लामी शनाख़्त को मज़बूती से थाम लें, दुश्मन से दूरी इख्तियार करें और सब से बढ़ कर ईमान व यक़ीन की क़ुव्वत से लैस हों और हमा वक़्त उनके दिल व दिमाग़ में यह ताज़ा रहे कि वह बेहतरीन उम्मत हैं जो लोगों के लिए बरपा की गई है और मुस्तक़बिल मुसलमानों का है।

❖❖❖

इस्लाम के मुक़ाबले में बीमार ज़ेहनियतों का किरदार

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

—हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

इस्लाम की हक़ीक़त और उसकी रूह से ना आशना अफ़राद अक्सर यह सवाल करते हैं कि दीने मतीन का वह कौन सा धुरा है, जो तमाम तहज़ीबी व तमद्दुनी फ़लसफ़ों और नज़रीयात पर हावी है, अदयान व मिलल का तक़ाबुली मुताला करने वालों, और गैर जानिबदारी के साथ मज़ाहिब का इल्म रखने वालों से यह हक़ीक़त पोशीदा नहीं है कि मज़हबे इस्लाम की तालीमात ही वह तालीमात हैं जिन्हें बक़ा व दवाम हासिल है, चुनांचि जब उसकी तालीमात सदा बहार, फ़ितरते इन्सानी से हम आहंग और करीब तर हैं तो उनका यह फ़ितरी हक़ है कि हर ज़माने में उन्हें बरुए कार लाया जाए, हर तरह की तरमीम व इस्लाहात से उन्हें महफ़ूज़ रखा जाए और सख़्त से सख़्त हालात और वक़्ती व आ़र्ज़ी मनाफे व मसालेह के सामने, उसकी कर्मठता और बरतरी को साबित किया जाए।

मज़हबे इस्लाम की तालीमात को बाज़ उन मज़ाहिब की तालीमात पर क़यास नहीं किया जा सकता जो अपनी अस्ली और हक़ीक़ी शक्ल में रूए ज़मीन पर गिन्ती के चन्द दिन बाक़ी रहीं, फिर तबदील व तहरीफ का शिकार हो गईं या अपने अ़हद के साथ रुख़्सत हो गईं, इस्लाम की तालीमात तो ज़माने के दस्त बुर्द से महफ़ूज़ हैं और महफ़ूज़ रहेंगी, क्यों कि रब्बे क़दीर ने हर तरह के तग़य्युर व तबद्दुल से उन की हिफाज़त व सियानत की ज़िम्मेदारी खुद ले ली है। इसी हक़ीक़त को अल्लाह तबारक व तआला ने इस आयते करीमा से आशकारा किया है "कि इस कुर्आन को हम ही ने नाज़िल किया है और हम ही उसके मुहाफिज़ हैं"।

(सूरः अल—हिज्र—9)

हां यह कहा जा सकता है कि मज़हबे इस्लाम जिस जिन्दगी को तश्कील देना चाहता है उसका माना व मफहूम साइंस व टेक्नोलाजी और तहज़ीबी तरक़्क़ियात के इस दौर में दीगर व सक़ाफती और मुआ़शरती व समाजी मफाहीम के साथ खल्त मल्त हो गया है, हत्ता कि यह सूरते हाल अब उन मुस्लिम तालीम याफ्ता तबक़ों के यहां भी देखने को मिल रही है जिन्होंने शरीअ़ते इस्लामी का अमली तजुरबा नहीं किया है और न इस्लाम के मिसाली मुआ़शरे में ज़िन्दगी गुज़ारने का उन्हें मौक़ा मिला, जब्कि उन का यह दावा है कि हम ने हैरत अंगेज़ टेक्नोलाजी और उसकी माद्दी तहज़ीबों की रफ़्तारों का मुशाहिदा किया है।

दर अस्ल बात यह है कि उनके दिलों में यह एहसास घर कर चुका है कि "इस्लाम" मौजूदा कारवाने ज़िन्दगी का साथ नहीं दे सकता और न मुहज़्ज़ब व मुसक़्क़फ इन्सानों की ज़रूरियात ज़िन्दगी की तक्मील में हाथ बटा सकता है, क्योंकि उसके अन्दर "जदीदीयत की रूह" बिल्कुल मफ़्क़ूद है, और उसके पास नित–नए–मसाइल का हाल मौजूद नहीं है, नये नये चैलनजों से पंजा आज़माई और हमलों का मुंह तोड़ जवाब देने की उसमें ताक़त व क़ुव्वत नहीं है, एक तरफ तो यह बात है, दूसरी तरफ उनके लिए शरीअ़त और उसके हामलीन पर यलग़ार करने और उन पर रजअ़त पसन्दी, तंग ज़ाविए फ़िक्र और महदूदीयत का इल्ज़ाम तराशने की गुंजाइश भी निकल आती है, जिस ने उनको नित नये सवालों का जवाब देने से आजिज़ कर दिया है जो ज़ेहनी आज़ादी, अख़्लाक़ी बे राह रवी, मर्दोजन को मसावात का दर्जा देने और उनको तर्ज़े अ़मल और कस्ब मआ़श में एक पोजीशन पर ला खड़ा करने की वजह से पैदा हो रहे हैं।

मुसलमानों के यह तबक़े जो बज़ाहिर इस्लाम के नाम लेवा नज़र आते हैं, लेकिन अंदरूनी तौर पर इस्लाम से इस दर्जा बदज़नी रखते हैं कि उसे दरवेशों और फ़कीरों का दीन गरदानते हैं, आज उनका हाल यह हो गया है कि वह एहसासे कमतरी का शिकार हो रहे हैं, खुद को तो बे वक्अ़त व बे हैसियत कर ही रहे हैं, साथ ही साथ मिसाली अफ़्राद की तारीख़ को भी दाग़दार करने की नाकाम कोशिशें कर रहे हैं जिन को इस्लाम ने गन्दे माहौल, वहशियाना सुलूक, गैर फ़ितरी तर्ज़े अ़मल, इन्तिहाई दर्जे की ज़िल्लत व पस्ती और उन जैसे दीगर बद तरीन अहवाल से निकाला था, जहां यह अपनी ज़िन्दगी के शब व रोज़ बसर कर रहे थे।

यह जमातें इस्लाम के हमागीर एहसानात को फरामोश न किए जाने के बावजूद फरामोश करने की सई नामशकूर कर रही हैं, क्या उन्हें वह दिन याद नहीं जब इन्सान ज़ालिमाना महकूमी व गुलामी के बोझ तले दबा जा रहा था। रूम व ईरान की तमद्दुन रियासतों में क़िस्म क़िस्म की शक़ावतें और तीरा बख़्तियां उन का नसीब बन गई थीं। यहूदियत व नस्रानियत के अलमबरदारों और दीगर हामिलीन मज़ाहिब के माबैन मारका आराइयां और खाना जंगियां छिड़ी हुई थीं, जिन में हज़ारों बे गुनाह लोग जाँ बहक़ हुए, ऐसे नाजुक मरहले में इस्लाम ने जो मिसाली और तारीखी रोल अदा किया है जो दरखशाँ कारनामे और ज़र्रीं ख़िदमात अन्जाम दिए हैं, क्या उन्हें

फरामोश किया जा सकता है?

कुर्आन मजीद ने इसी सूरते हाल और आपस में दस्त व गिरेबां जमातों और क़ौमों का नक़्शा अपने मोजिज़ाना उस्लूब में यूं खींचा हैः ''अल्लाह का इनअ़ाम अपने ऊपर याद रखो, जब तुम बाहम दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे कुलूब में उल्फ़त डाल दी, सो तुम उसके इन्अ़ाम से आपस में भाई भाई बन गए और तुम दोज़ख के गडढ़े के किनारे पर थे तो उसने तुम्हें बचा लिया।

(सूरः आले इमरान–103)

आज बकसरत यह देखने को मिल रहा है कि अल्लाह तअ़ाला ने जिन्हें दौलते इस्लाम से नवाज़ा है, और इस्लामी तालीमात के मुताला की तौफीक़ दी है उन लोगों के दिलों में यह शुब्हा पैदा हो रहा है कि क्या इस्लाम, इल्म व टेक्नोलाजी के इस नए दौर में भी लाइक़े तन्फीज़ और क़ाबिले अमल है? चुनांचे वह उलमाए इस्लाम और दाइआने उज़्ज़ाम क़दीम सालिह और जदीद नाफे की रोशनी में कोताह फहमी, ज़माने के बदलते हुए हालात से नावाक़िफीयत व नातज्रबा कारी और तहज़ीबी व तमुद्दुनी मुआ़शरा की तशकील में नाकामी का इल्ज़ाम तराशते फिरते हैं, चुनांचे उन्होंने अपने मुशाहदात और मफ़रूज़ा ख़ियालात को ईमान व ईक़ान की दौलत से मालामाल शख़्स पर लाज़िम करने का जवाज़ निकाल लिया है। और उस ''मोतदिल इस्लाम'' को पेश करने में कोताही नहीं बरती जो हालात ज़माने और बीमार ज़ेहनियतों के तक़ाज़ों के ऐन मुताबिक और उन से हम आहंग हो, और उनकी तमन्ना यह है कि ''उम्मते मुस्लिमा'' गर्दिशे दौरां और मसाइबे ज़माना के ज़द में आ जाए, वह उस उम्मत का ख़ातिमा के लिए गैर मामूली कोशिश करने से बाज़ नहीं आ रहे हैं, जिसे अल्लाह तआला ने ''खैरे उम्मत'' के लक़ब से सरफराज़ फरमा कर पूरी दुन्या की क़यादत व इमामत और रहनुमाई व हिदायत के लिए इस सफ–ए–हस्ती पर मबऊस फरमाया है और जंगल के ख़ुदरौ सब्ज़ घास की तरह बे यार व मददगार नहीं छोड़ा।

उन्हीं फ़र्सूदा अफ़कार व ख़यालात और खोखले मुजाहरे ने नतीजे में मुस्लिम मुआ़शरे में ऐसे कमज़ोर अ़काइद रखने वाली जमाते वजूद में आ गई हैं जो शरीअ़ते इस्लाम और उसकी सक़ाफत को दागदार करने में कोशां हैं, योरोपीय क़ाइदीन ने अपने तख़रीबी मन्सूबे के इस्तेहकाम की खातिर उनका इस्तेसाल किया और वह मुसलमानों की मानवी सलाहीयत को मस्ख़ करने और मज़हबे इस्लाम की साफ व शफ्फाफ शक्ल व सूरत को बिगाड़ने और उसकी रोशन व

ताबनाक शरीअ़त को बद सूरत बनाने में मसरूफ़ हैं जिस का नतीज़ा यह हुआ कि उन तख़रीबी अफकार व ख़यालात का दाइरा उन मंसूबों को अमली जामा पहनाने में मुआविन होता चला जा रहा है।

आज कुर्आन व हदीस में तहरीफ व तब्दील करने की जो बदतरीन कोशिशें की जा रही हैं, और इस नापाक मक़्सद को पूरा करने के लिए जो एक जबरदस्त माली बजट तैयार किया जा रहा है, वह उस मैदान में होने वाली जबरदस्त सरगर्मियों और उनके संजीदा आमाल की सब से बड़ी दलील है।

मक़ामे अफ़सोस है बल्कि ज़ियादा सही तर लफ़्ज़ों में यह कहने को जी चाहता है कि जिगर को चाक कर देने वाली बात है कि मुसलमानों की एक बड़ी तादाद अपने दुश्मन व हरीफ ''अहले मग़रिब'' की कोशिशों और सरगर्मियों को तेज करने, उनकी निकम्मी व मामूली पूंजी को बढ़ावा देने में उनकी शरीक व सहीम है। जब कि उसका दीवालिया निकल चुका है और उस का खोट दो दो चार की तरह साहिबे बसीरत के नज़दीक अयां और बे नक़ाब हो गया।

वह अल्लाह के नूर को अपने मुंह की फूँकों से गुल करना चाहते हैं जब कि अल्लाह तआला अपना नूर पूरा करके रहेगा, अगर्चे मुन्करीन नापसन्द करें।

(सूर सफ–8)

मग़रिबी सामराज जो मुस्लिम मुमालिक में मुसलमानों के साथ गुलामों जैसा सुलूक कर रहा था, इस की यही तमन्ना रहती है कि मुसलमान हमेशा गुलामी व महकूमी की जिन्दगी गुज़ारता रहे, ताकि वह इल्म व सक़ाफत के आला तरीन मुक़ाम पर फाइज़ होने के बारे में कुछ सोच भी न सके और उस का एहसासे दौरां और उन की बातिनी कैफ़ियात बड़े बड़े अहम उमूर के सिलसिले में बिल्कुल ही ख़त्म हो जाए, इस मक़्सद को पायाए तक्मील तक पहुंचाने के लिए उन्होंने एक मख़सूस निसाबे तालीम तैयार किया है। जिस का ज़िन्दगी के तमाम मैदानों में हत्ता कि मआ़शी मसाइल में भी फाइदा नज़र नहीं आ रहा है। उम्मते मुस्लिमा को नुक्सान पहुँचाने और उनको एहसासे कमतरी के आखिरी दर्जे में लाने की जो जान तोड़ और अन्थक कोशिशें मगरिबी सामराज और उनके हम नावावों ने की हैं, वह किसी से पोशीदा नहीं, लेकिन उसे बद किस्मती न कहा जाए तो और क्या कहा जा सकता है सामराजीयत के ख़ातमे और मुल्कों की आज़ादी के बावजूद वह क़ौमें जो मुद्दतों मगरिबी सामराज्य के जेरे साया ज़िन्दगी गुजारती रहीं, वह उस दौर के इन्सानी मुआशरे के ना पसन्दीदा मत्रूका अशया से भी बे तअल्लुक न हो सकें और कमा हक़्कुहु उन को मब्नूज

व मक्रूह भी न तसव्वुर कर सकें।

अगर आ़लमे इस्लाम अपने फितरी उलूम व मआ़रिफ और कुदरती वसाइल से माला माल न होता तो साम्राजी अफ़राद की मसनूई ईजाद करदा क़हत सालियों से दो चार हो जाता, लेकिन उन्होंने उस के बजाए मुसलमानों को उन के ईमान व अक़ाइद से बर तरफ़ करने की हर मुमकिन कोशिशें कीं, कभी शरीअ़त में तहरीफ़ व तब्दीली और खुर्द बुर्द के जरिये, तो कभी मुआशरती निज़ाम में लाक़ानूनीयत व बदनज़्मी फैला कर, कभी मआ़शी व तिजारती मुआ़मलात में सूद के इस्तेमाल को नागुज़ीर ज़रूरत क़रार दे कर और कभी शख़्सी मुनाफ़ा और दुन्यावी मसालहे की बुन्याद पर तमाम तर तअल्लुक़ात काइम करके, कभी मुस्लिम औरतों को घरों से निकाल कर शाहराहों पर ला खड़ा कर के, तो कभी सियासी व इक्तिसादी उमूर में उनको हिस्सा दिला कर के, हत्ता कि एलक्शनों और रिफाहे आ़म्मा के कामों और सरकारी दफातिर में मुलाज़मत दे कर, कोई कहां तक गिनाए, खुलासा यह कि औरतों को मर्दों के साथ तमाम शोब–ए–ज़िन्दगी में सहीम व शरीक कर के मुस्लिम कौमों के अक़ाइद व ईमान और उनकी गैरत को ख़त्म करने की उन्होंने सई पैहम और जोहदे मुसलसल की है।

इस तर्ज़े कुहन के ज़रीआ माद्दी ताकतों से लैस मग़रिबी कैम्प मुस्लिम मुमालिक को शिकार करने की कोशिश कर रहे हैं और अब वह ऐसे इस्लाम नुमा मुआशरा की तश्कील के दरपे हैं जो सिर्फ चन्द ज़ाहिरी शक्ल व सूरत ही में इस्लाम की नुमाइन्दगी करे, और अ़काइद और ईमानी उसूलों का इस्लामी तालीमात की हमागीरी और अक़ाइद की बरतरी से उस का कोई तअल्लुक़ न हो।

इस तरह कैम्प अक़वाम तारीखे इस्लाम की शबीह बिगाड़ने में काम्याबी व शादकामी की राह पर गामज़न हैं, लेकिन इसके बावजूद वह मज़हबे इस्लाम की तहजीब व सक़ाफत और उसकी किताब व शरीअ़त को ख़त्म करने में नाकाम ही रही और रहेगी, क्योंकि इस दीन की बक़ा व तहफ़्फ़ुज़ और दीगर अदयान पर उसके तफव्वुक़ बरतरी और ग़लबा व तसल्लुत की ज़िम्मेदारी खुद ख़ालिक़े काइनात ने ले ली है, जैसा कि इरशाद रब्बानी है।

''वही वह ज़ात है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक़ के साथ मबऊस फरमाया ताकि उसे हर दीन पर ग़ालिब करे और अल्लाह तआला बतौरे गवाह के काफी है''।

(सूरः फ़त्ह–28)

❖❖❖

आप के प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः मौजूदा दौर में गैर मुस्लिमों में भी कुर्आन के मुताला करने का रुज्हान बढ़ा है, लेकिन अरबी ज़बान से नावाक़िफ होने की वजह से वह नहीं पढ़ पाते हैं। ऐसी सूरत में दावती नुक़्तए नज़र से अगर कुर्आन के अल्फ़ाज़ मुख़ातब की ज़बान के रस्मुल– ख़ात में लिख दिए जाएं, और शाए किए जाएं, मसलन गुजराती, हिन्दी या अंग्रेज़ी ज़बान में तो क्या यह दुरुस्त है?

उत्तरः कुर्आन अल्लाह तआ़ला की आख़िरी आसमानी किताब है, जो आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हज़रत जिब्रईल अलै0 के वासिता से उतरी है, उस वक़्त से अब तक पूरी तरह उन्हीं अल्फ़ाज़ व हुरूफ में मौजूद और महफूज़ है, जिन में यह नाज़िल हुई है, और क़यामत तक हमेशा उसे इसी तरह रहना है, इसलिए कि कुर्आन का उन्हीं अ़रबी हुरूफ व अल्फ़ाज जिन को रस्म उस्मानी कहते हैं शाए करना लाज़िम है, दूसरी किसी भी ज़बान में उनके हुरूफ लिखना और शाए करना जाइज़ नहीं है, बल्कि ब इज्मा उम्मत हराम है। (अल इतक़ान लिल– सियूतीः 2/329, अन्नफहतु अलकुदसीयाः 35)

दावती या किसी भी मक़सद से उस को गैर अ़रबी में शाए करना तहरीफ का दरवाज़ा खोलना है, शरीअत की निगाह में कुर्आन का कामिल तौर पर महफूज़ रहना किसी और मक़सद के हुसूल से कहीं ज़ियादा अहम है इसलिए बेहतर यह है कि कुर्आन का पैग़ाम गैर मुस्लिमों के दर्मियान उन की ज़बान में पहुंचाया जाए, या अरबी मतन के साथ उसके मआ़नी मुख़ातब की ज़बान में पेश किए जाएं, इससे दावती मक़सद हासिल हो सकता है।

प्रश्नः मतन कुर्आन के बगैर किसी भी ज़बान मसलन अंग्रेज़ी, हिन्दी या मलयालम वगैरा में तन्हा तर्जमा कुर्आन शाए किया जा सकता है या नहीं? इधर कई वर्षों से देखा जा रहा है कि लोग सिर्फ तर्जमा कुर्आन शाए कर रहे हैं, क्या इस किस्म का तर्जमा खरीदना या हदीया करना या आम लोगों में तक़्सीम करना दुरुस्त है?

उत्तरः कुर्आन मजीद वह आस्मानी किताब है जिन के हुरूफ़ व मआ़नी दोनों मुनज़्ज़ल मिनल्लाह हैं और दोनों के मजमूआ़ को कुर्आन कहा जाता है, सिर्फ तन्हा तर्जमा कुर्आन नहीं है जम्हूरे उम्मत और सलफ़ सालिहीन का फैसला यही है, इमाम इब्ने तैमिया रह0 ने इस फैसले को नक़्ल करने के

बाद लिखा है, अनुवादः *पस यह कि कुर्आन पूरा का पूरा अल्लाह का कलाम है उसके हुरुफ़ व मआ़ना और सिर्फ मआना कुर्आन नहीं हैं न सिर्फ हुरूफ़ बल्कि हुरूफ़ व मआ़ना मिल कर कुर्आन है। ख़त्ते उस्मानी में जो सिर्फ हुरूफ़ से कुर्आन लिखा जाता है उसमें मआ़ना शामिल समझे जाते हैं।*

(फतावा इब्ने तैमिया रह0 12/244) अभी इस्लामिक फिक़्ह अकेडमी इंडिया ने इस मौज़ू पर 1 ता 3 मार्च सन् 2015 ई0 सेमीनार मुनअ़क़िद किया और तमाम शरीक़े अरबाब फिक़्ह व फतावा के इत्तिफ़ाक़ से जो तजावीज़ पास हुईं उन में तजवीज़ नम्बर–2 की इबारत यह है– "मतने कुर्आन के बग़ैर किसी ज़बान में तन्हा तर्जमा –ए–कुर्आन की इशाअत नाजाइज़ है, लिहाज़ा उसे ख़रीदना, तक़्सीम करना हदीया करना दुरुस्त नहीं है"।

प्रश्नः मौजूदा दौर में नाबीना और आँख से माजूर लोगों के लिए बरैल कोड में तालीम का रिवाज हो गया है, इसके लिए स्कूल और कालेज भी खुल गए हैं, इसी कोड में नाबीना हज़रात कुर्आन की तिलावत करने लगे हैं क्या उनके लिए बरैल कोड में कुर्आन मजीद की इशाअत जाइज़ है? क्या यह रस्मे उस्मानी के खिलाफ तो नहीं है?

उत्तरः बरैल कोड एक रम्ज़ है, रस्म नहीं है, इसलिए बरैल कोड की मदद से कुर्आन मजीद की तिलावत दुरुस्त है, और उसमें कुर्आन मुंतक़िल करना भी जाइज़ है, इस मसला पर सेमीनार में जो तजावीज़ पास हुई हैं, उनमें एक तजवीज़ यह है "चूंकि बरैल कोड अलामती ज़बान है, रस्मुल ख़त नहीं, इसएिल नाबीना अफ़राद की हाजत व सुहूलत के पेश नज़र बरैल कोड में कुर्आन हकीम की किताबत व इशाअत जाइज़ है" और चूंकि यह कुर्आन करीम का रम्ज़ है, इसलिए इस का पूरा एहतिमाम मलहूज़ रखा जाए, अलबत्ता यह बात जरूरी है कि नाबीना हज़रात कुर्आन करीम के सहीह तलफ़्फुज़ से वाक़िफ शख्स की मदद से कुर्आन पाक की तालीम हासिल करें।

(इस्लामिक फ़िक्ह अकेडमी, इंडिया)

प्रश्नः मकातिब में बच्चों को पारा 30 खिलाफे तरतीब कुर्आन पढ़ाया जाता है, क्या यह तरीक़ा दुरुस्त है?

उत्तरः बच्चों की तालीमी सुहूलत के मक़्सद से पारा अम खिलाफ तरतीब पढ़ाया जाता है, बच्चों को पढ़ाने में एक वक़्त में पूरे पारे की तिलावत भी नहीं होती है बल्कि थोड़ा थोड़ा हिस्सा पढ़ा जाता है, इसलिए इस तरीक़–ए–तालीमे कुर्आन को ग़लत नहीं कहा जा सकता है। फुक़्हा ने इसके जवाज़ की सराहत की है "कुर्आन की तालीम की ग़रज़ से बड़े उलमा ने इसको जाइज़ किया है"।

(तहतावी अला अद्दुर्रुल मुख़्तारः 1/371)

प्रश्नः No Cost EMI से ***Flipkart*** (बगैर इज़ाफी रक़म क़िस्तों पर) सामान खरीदना कैसा है?

उत्तरः मौजूदा दौर में ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ शोबों में सूदी लेन देन इस अंदाज में राइज़ कर दिया गया है कि बसा औक़ात इस पर सूद का गुमान भी नहीं होता, नेज़ सहूलियात और आसाइश के नाम पर क़र्ज़ लेने की तर्ग़ीब भी दी जाती है और क़र्ज़ के इस पूरे अमल को बहुत सहल बना कर पेश किया जाता है, इस की एक कड़ी ***No Cost EMI*** की ***Flipkart*** स्कीम भी है, इसकी तफ़्सील यह है कि–

कम्पनी ख़रीदार को यक़ीन दहानी कराती है कि क़िस्तों पर सामान ख़रीदने की सूरत में उसे सामान की अस्ल क़ीमत के बक़द्र ही रक़म चुकानी पड़ेगी और इसके बाद अगर्चे इसमें मजीद तफ्सीलात भी हैं ताहम कोई इज़ाफी रक़म नहीं देनी पड़ेगी, हिन्दोस्तान का बैंककिंग क़ानून किसी भी बैंक को इस बात की इजाज़त नहीं देता कि वह गैर सूदी क़र्ज़ जारी कर सके, उधर कम्पनियां अपना सामान बेचने में भी हद दर्जा दिलचस्पी रखती हैं, इसी बिना पर कम्पनियां बैंकों से इस तौर पर मुआमला करती हैं कि इस कर्ज़ पर जो सूद लाज़िम आता है, उसे वह सामान की अस्ल क़ीमत से घटा देती हैं और इस तरह यह क़ीमत बराबर हो जाती है, बैंक सूद भी वसूल लेता है, कम्पनी का सामान भी बिक जाता है और ख़रीदार भी सामान की अस्ल क़ीमत से कोई इज़ाफी रक़म नहीं चुकाता।

मसलन एक सामन की अस्ल क़ीमत बारा हज़ार रूपये है, बारा महीनों की क़िस्तों के एतिबार से इस पर चार सौ रूपये सूद बनता है, इस तरह सामान की अस्ल क़ीमत बारा हज़ार चार सौ रूपये हो जाती है, अब कम्पनी अस्ल क़ीमत से चार सौ रूपये की रक़म कम कर देती है और इस तरह ख़रीदार कुल बारा हज़ार ही अदा करता है चूंकि इस सूरत में बैंक अपना सूद वसूल कर रहा है इसलिए सूदी कर्ज़ होने के एतिबार से इस स्कीम के तहत सामान खरीदना शरई एतिबार से जाइज़ नहीं है।

प्रश्नः बाज़ कम्पनियां अपनी वेब साइट या एप्लीकेशन पर वीडियो इश्तिहार डालती हैं और उन को देखने पर मुआवज़ा देती हैं, क्या इस तरह से पैसा खाना जाइज़ है?

उत्तरः अगर यह इश्तिहार गैर शरई उमूर पर मुशतमिल हों तो उनके ज़रीआ देखने वाले भी गैर शरई उमूर की तरवीज व इशाअ़त में शरीक हैं और तआ़वुन अललइस्म के मुर्तकिब हो रहे हैं, लिहाजा यह जाइज़ न होगा,

हाँ! अगर यह इश्तिहार ग़ैर शरई उमूर से पाक हो तो कोई क़बाहत नहीं। अनुवादः ''जो लोग चाहते हैं कि चर्चा हो बदकारी का ईमान वालों में, उनके लिए अज़ाब दर्दनाक दुन्या व आखिरत में (अन्नूरः19)।

यानी बे हयाई की बातों को फैलाना भी सख़्त गुनाह है और दुन्या व आखिरत में बाइसे अज़ाब है।

प्रश्नः क्या किसी कम्पनी का खरीद कर्दा शेयर कम्पनी में शेयर होल्डरों की मिलकीयत की नुमाइन्दगी करता है या महज़ इस बात की दस्तावेज़ है कि उसने यह रक़म कम्पनी को दी है? दोनों सूरतों में शेयर होल्डरों की हैसीयत शर्अन क्या होगी?

उत्तरः कम्पनी में ख़रीद कर्दा शेयर कम्पनी में होल्डर की मिलकियत की नुमाइन्दगी करता है, इसी तरह किसी कम्पनी का खरीद कर्दा एकवेटी शेयर कम्पनी में शेयर होल्डर की मिलकीयत की नुमाइन्दगी करता है, वह महज़ इस बात का दस्तावेज़ नहीं है कि उसने कम्पनी में इतनी रक़म दी है, इस तरह शेयर होल्डरों की हैसीयत कम्पनी में एक शरीक की होगी और शुरकाए कम्पनी के असासे में शरीक होने की वजह से नफा व नुक्सान दोनों के मालिक होंगे। (इस्लाम का निज़ामे मईशतः 37)

प्रश्नः बाज़ औक़ात कम्पनी क़ाइम करते वक़्त शेयर्स का एलान किया जाता है और उस वक़्त उसके पास कुछ भी इम्लाक नहीं होते हैं, इस वक़्त अगर कम्पनी के ख़रीद कर्दा शेयर्स की बैअ़की जाए तो इस सूरत में नक़्द के मुक़ाबिल होता है, इस का क्या हुक्म है?

उत्तरः कोई शख़्स कम्पनी के क़ाइम होने के बाद कम्पनी से शेयर्स खरीद रहा है तो यह दुरुस्त है, क्योंकि यह शिरकत है और अगर कम्पनी से खरीदने के बाद बेच रहा है और अभी कम्पनी के पास कुछ असासा न हो तो यह जाइज़ नहीं है, क्योंकि आदमी एक तरफ से नोट दे रहा है, और दूसरी तरफ़ से सिर्फ शेयर के पेपर, गोया जिस तरह बैंक ड्राफ्ट की हवालगी को मुअ़य्यन रक़म का दर्जा दिया जाता है, इसी तरह इसको भी मुअ़य्यना रक़म का दर्जा दिया जायेगा, लेकिन इस को अस्ल क़ीमत *(Face Value)* ही में बेचना दुरुस्त होगा, तफाज़ुल यानी कमी बेशी के साथ बेचना दुरुस्त नहीं होगा।

इस मौज़ू पर फिक़्ह एकेडमी ने बहस व तहक़ीक के बाद जो फैसला लिया है वह यही है कि ऐसी कम्पनियों के शेयर्स की इब्तिदाई खरीदारी जो अभी सरमाया इकट्ठा करने के मरहले से गुज़र रही है, शर्अ़न खरीदारी नहीं है बल्कि शिर्कत है।

(एकेडमी के फैसलेः 27)

❖❖❖

कून्डे की रस्म

—इदारा

कून्डे की रस्म शिया हज़रात की ईजाद है जो सुन्नियों में भी बर आई कून्डे की रस्म 22 रजब को मनाते हैं उस दिन मीठी टिकिया पकाते हैं और दूसरी मिठाइयां भी मुहय्या करते हैं और हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रह0 को फातेहा दे कर सब आपस में खाते हैं और ख़ुशियां मनाते हैं।

इमाम जाफ़र सादिक़ इमाम मुहम्मद बाकिर के बेटे हैं और वह हज़रत ज़ैनुल आ़बिदीन के बेटे हैं और हज़रत ज़ैनुलआबिदीन हज़रत हुसैन रज़ि0 के बेटे हैं हम सुन्नी लोग इमाम जाफर और इमाम बाकिर दोनों को बुज़ुर्ग मानते हैं लेकिन उनके साथ जो इमाम का लफ़्ज़ लगा हुआ है वह शियों के मआ़ना (अर्थ) में नहीं मानते शिया हज़रात ने बारह इमाम मुक़र्रर किये हैं हम उनके अक़ीदे के मुताबिक़ उनको इमाम नहीं मानते।

किसी बुज़ुर्ग की फातेहा (ईसाले सवाब) के लिए किसी तारीख़ या दिन को मुक़र्रर करना हम सही नहीं समझते लेकिन जो लोग मुक़र्ररा तारीख़ पर किसी बुज़ुर्ग की फातेहा का एहतिमाम करते हैं वह उन बुज़ुर्ग की तारीख़े वफात का लिहाज़ करते हैं लेकिन इमाम जाफ़र सादिक़ रह0 की तारीख़े वफ़ात 22 रजब नहीं है राज़ इसमें ये है कि 22 रजब को हज़रत मुआ़विया रज़ि0 का इन्तिक़ाल हुआ तो शियों को बहुत ख़ुशी हुई लेकिन उस वक़्त सुन्नियों का ऐसा दबदबा था कि शिया, हज़रत मुआ़विया के इन्तिक़ाल पर खुल कर ख़ुशी नहीं मना सकते थे इसलिए उन्होंने इमाम जाफ़र सादिक़ रह0 की फातेहा के बहाने ख़ुशियां मनाई और मीठी टिकिया खांई। हम सुन्नियों को कून्डे की बुरी रस्म से दूर रहना चाहिए। मालूम नहीं शिया हज़रात अब भी कून्डे की रस्म मानते हैं या नहीं अब तो उन पर कोई ऐसा दबाव नहीं है वह मजलिसों में तबररा पढ़ते हैं जिसमें हज़रत मुआ़विया पर लअ़नत भेजते हैं। अल्लाह की पनाह एक सहाबी पर लअ़नत भेजना कितना बड़ा गुनाह है अल्लाह उनको हिदायत दे। हम सारे सहाबा को बुज़ुर्ग मानते हैं अपना रहनुमा मानते हैं। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और उन्होंने अपने अल्लाह को राज़ी कर लिया।

❖❖❖

अस्हाबे नबी सल्ल० से अक़ीदत

—इदारा

रब की महब्बत दिल में हमारे रब की इबादत करते हैं
प्यारे नबी महबूब हमारे उनकी ताअ़त करते हैं
नबी की ताअ़त वाली इबादत होती है मक़बूल ज़रूर
सलामो रहमत रग़बत से हम प्यारे नबी पर पढ़ते हैं
मोमिन हो कर नबी को देखा मौत हुई ईमान पर
रब ने दौलत जिसको यह दी उसे सहाबी कहते हैं
सारे सहाबा अल्लाह वाले सारे सहाबा जन्नत वाले
सब के सब रहनुमा हमारे सबसे अक़ीदत रखते हैं
बू बक्र, उमर, उस्मान, अ़ली का दर्जा बहुत ही ऊँचा है
उम्मत में अस्हाबे नबी सब ऊँचा दर्जा रखते हैं
बा हम जंगें हुई उन में मलक नहीं इन्सान वह थे
लेकिन बख़्शिश सब की होगी ऐसा अक़ीदा रखते हैं
हाँ हाँ जंगे हुई हैं उनमें लेकिन बाहम उल्फत थी
हाल अ़ली का सुन कर मुआ़विया फूट-2 कर रोते हैं
अम्र, मुआ़विया और मुग़ीरा बेशक हैं अस्हाबे नबी
ख़ालिद हैं तलवार ख़ुदा की सबसे महब्बत रखते हैं
रब राज़ी अस्हाबे नबी से रब ने उनको इ़ज़्ज़त दी
मिले साथ जन्नत में उनका रब से दुआऐं करते हैं
सलामो रहमत नबी पे या रब और उनकी आल पर
उनके सब अस्हाब पर भी दुआ में हम यूँ कहते हैं

हक़ के मेअ़यार को सामने रखने की ज़रूरत

—मौलाना सय्यिद अब्दुल्लाह ह़सनी नदवी रह0 —हिन्दी लिपिः उबैदुल्लाह मतलूब

सच्चाई का इतलाक़ उस शख़्स पर किया जायेगा जो हर हाल में वाक़िये के मुताबिक ही बात कहता हो और उसी बात पर अ़मल भी करता हो, यानी अगर कोई शख़्स वहीये इलाही के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता है तो वह उसी क़द्र सच्चा है, इसी तरह जो शख़्स दुन्या के मुआ़मलात में ह़क़ीक़त के मुताबिक़ जितना कहने सुनने और करने वाला होगा उतना ही वह सच्चा होगा जैसा कि जनाबे—रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अहले मक्का शुरु ही से सादिक़ कहते थे, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो कुछ भी कहते थे आप वही करते थे यानी जो आप का अ़मल था वही आप का क़ौल भी था, और जो आपका हाल था वही अ़मल भी था और जो आपका अ़मल था वही क़ौल भी था, गोया कि तीनों में मुताबक़त थी और यही हाल सहा—बए —किराम का भी रहा कि उनके यहां भी क़ौल, अ़मल में तज़ाद नहीं पाया जाता था इसी लिए इस बात पर सबका इत्तिफ़ाक़ है कि वह दौर सदाक़त का दौर था गोया जो बात उनके दिल के अन्दर होती थी वही बाहर भी होती थी, ऐसा नहीं था कि दिल में ह़सद हो और ज़ुबान पर शीरीं कलामी ज़ाहिर की जाए, यहां तक कि ज़मानये जाहिलीयत में भी अ़रबों का यह मिज़ाज नहीं था कि वह झूठ बोलें, क्योंकि वह हक़ीक़त पसन्द लोग थे। लेकिन उसके बरख़िलाफ अज़मियों का आ़म मिज़ाज है, क्योंकि हमारे यहां ये हाल है कि यहां सच बोलने वाले नहीं हैं, बल्कि अक्सर झूठ ही बोलने वाले हैं, यही वजह है कि आज हर आदमी दूसरे आदमी को झूठा समझता है और उस पर शक करता है कि वह सच्चा है या झूठा, और ये आज का ऐसा मर्ज़ है कि उसमें अच्छे—अच्छे मुब्तला हैं, यहां तक कि जो लोग देखने में बड़े दीनदार मालूम होते हैं उनका भी जब हाल मालूम किया जाए तो यह मालूम होता है कि वह हज़रात भी इस मर्ज़ से ख़ाली नहीं हैं।

दरह़क़ीक़त ईमान और सच्चाई लाज़िम मलज़ूम हैं, जिसकी दलील ये है कि अगर कोई ग़ैर मज़हब का शख़्स भी सच्चा दिल और सच्ची नीयत वाला हो और उसके बाद वह सहीह तौर पर ईमान की सच्चाई से आशना हो जाए तो ज़रूर दाख़िले इस्लाम हो जाता है,

क्योंकि रोशनी की रोशनी से कभी लड़ाई नहीं होती अगर कहीं एक बल्ब लगा हो और दूसरा भी लगा दिया जाए तो मज़ीद रोशनी फैलेगी ना कि ख़त्म हो जाएगी, लेकिन अगर कमरे में अंधेरा है और वहां बल्ब लगा दिया जाए तो अंधेरा दूर हो जाएगा। मालूम हुआ कि रोशनी से रोशनी की लड़ाई नहीं हो सकती, बल्कि रोशनी की तारीकी से, जुलम की इंसाफ से लड़ाई होती है, इंसाफ की लड़ाई इंसाफ से नहीं होती, क्योंकि उसमें दोस्ती है, लड़ाई जब ही होती है जब आपस में टकराव हो, इसी लिए अगर कोई सच्चा दिल, सच्ची ज़ुबान ले कर आए फिर इस्लाम का सच देख ले तो फौरन हम आहंग हो जाता है, एक ह़दीस में नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है ''तुम पर सच्चाई लाज़िम है, और सच्चाई नेकी की तरफ हिदायत करती है, और नेकी जन्नत की तरफ ले जाती है, आदमी बराबर सच बोलता रहता है और सच्चाई को ही इख़्तियार कर लेता है तो वह मक़ामे सिद्दीक़ीयत को पहुंच जाता है और अल्लाह तआ़ला के यहां सिद्दीक़ लिख दिया जाता है। और झूठ से बचना लाज़िम है क्योंकि झूठ बोलने की आदत आदमी को बदकारी की राह पर डाल देती है और बदकारी उसको दोज़ख तक पहुंचा देती है। और आदमी झूठ बोलने का आ़दी होता है और झूठ को इख़्तियार कर लेता है तो अंजाम यह होता है कि वह अल्लाह के यहां कज़्ज़ाब लिख दिया जाता है''।

हदीस में फरमाया गया ''सच्चाई नेकी की तरफ रहनुमाई करती है फिर सच्चाई और नेकी दोनो ही आदमी को जन्नत में ले जाती हैं, लेकिन अगर कोई शख़्स झूठ बोलता है तो उसका वह झूठ इंसान को गुमराही की तरफ ले जाता है इस लिए कि सच्चा आदमी जो भी कहता है एक मरतबा कह देता है और उम्र भर उसका वही क़ौल रहता है, और झूठा आदमी अपने झूठ को छुपाने के लिए हर वक़्त अपना क़ौल बदल बदल कर पेश करता है जिसका नतीजा होता है कि वह हर वक़्त एक उलझन में गिरफ्तार रहता है और झूठ बोलते बोलते जहन्नम रसीद कर दिया जाता है।'' इसी तरह मज़कूरा बाला हदीस में फरमाया गया कि इंसान को सच बोलने की आदत डालते रहना चाहिए, यानी इंसान को हर उस चीज़ से बचना चाहिए जो आदमी को मुबालग़ा और बेजा तारीफ पर आमादा करे, क्योंकि यह सब झूठ की अक़साम हैं।

एक दूसरी हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने झूठ की बदतरीन क़िस्म बयान करते हुए फरमाया ''बदतरीन झूठ यह है कि आदमी ने जिस चीज़

को देखा न हो उसके मुतअ़ल्लिक़ कहे कि मैंने उस को देखा है''।

इस हदीस से यह समझा जा सकता है कि झूठा ख़्वाब बयान करना झूठ ही में शामिल है लेकिन यह मर्ज़ इस ज़माने में बहुत कसरत से बाज़ ज़ाहिरी बुज़ुर्गाने दीन में भी सारयत कर चुका है जो कि अपनी बुज़ुर्गी बताने के लिए झूठे ख़्वाबों को ज़रूर बयान करते हैं, इसी लिए जो लोग ज़ियादातर ख़्वाब देखते हैं वह पक्के झूठे होते हैं इल्ला माशाअल्लाह। यानी बहुत कम लोग ऐसे हैं जो सहीह मअ़ने में ख़्वाब देखते हों वरना अक्सर ख़्वाब तो झूठे ही रहते हैं, हज़रत मौलाना मुहम्मद अमीन साहब नसीराबादी रह0 फरमाते थे अगर कोई शख़्स यह कहे कि मैंने ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है लेकिन वह मुत्तबअ़े सुन्नत न हो तो यह समझा जा सकता है कि वह पक्का झूठा है, लेकिन आज कल हर कोई बताता है कि उस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की है, यहां तक कि बाज़ के झूठ बोलने की हद इस क़द्र बढ़ चुकी है कि आंख बन्द करते ही वह ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत कर लेते हैं।

ख़्वाब की दो क़िस्में होती हैं, एक ख़्वाब वह जो इंसान सोने की हालत में सच्चा ख़्वाब देखता है और एक ख़्वाब वह है जो आजकल राइज है यानी इंसान आँखे बन्द करता है और सोचने लगता है कि मैं कितना बड़ा बुज़ुर्ग हूँ। बड़ी तादाद में लोग मेरे आगे पीछे चल रहे हैं, मैं अ़मामा बान्धे हुए मसनदनशीं हूँ, और लोग मेरे सामने नियाज़ मन्दाना बैठे हैं तो यह सब शैतानी ख़्वाब हैं।

हाजी इम्दादुल्लाह साहब मुहाजिर मक्की रह0 के पास एक तालिबे इल्म अ़रबी पढ़ता था और पढ़ने में बहुत ज़हीन था, इत्तफाक़ से एक रोज़ उसका किसी जंगल से गुज़र हुआ, जहाँ उसको झाड़ी से किसी के सलाम करने की आवाज़ आई, लेकिन जब वहां उसने देखा तो उसको कोई नज़र नहीं आया, चुनांचि जब वह उसी जगह से दूसरे दिन गुज़रा तो फिर वही सलाम की आवाज़ आई, और ऐसा महसूस हुआ कि झाड़ी में कोई शख़्स है, लिहाज़ा जब ये लड़का वहां गया तो उसने देखा कि एक सफेदपोश बुज़ुर्ग अ़मामा बाँधे हुए तशरीफ फरमा थे, उन्होंने लड़के से उसकी ख़ैरियत दरयाफ़्त की, और मालूम किया कि आप क्या पढ़ते हैं? तो उसने बताया, मैं तालीम हासिल कर रहा हूँ, लेकिन बुज़ुर्ग से उस दिन इतनी ही बात हुई और तालिबे इल्म घर वापस आ गया लेकिन उसके बाद उन बुज़ुर्ग से वक़्तन फवक़्तन रोज़ाना की मुलाक़ात शुरु

हो गई, चुनांचि उन्होंने एक दिन उस लड़के से कहा तुम ने कुर्आन हिफ़्ज़ कर लिया? लड़के ने जवाब दिया, नहीं। बुज़ुर्ग ने कहा अगर तुम हाफ़िज़े कुर्आन बन जाओ तो तुम को बहुत फायदा होगा क्योंकि उससे बहुत फैज़ पहुंचता है, यानी लड़के के ऊपर इस तरह से शैतानी वार किया कि उसको बुरा भी न लगे, लिहाज़ा लड़का बुज़ुर्ग की इस नसीहत को सुन कर अ़रबी तालीम छोड़ कर हि़फ़्ज करने के लिए आमादा हो गया और उसने आ कर पूरा कि़स्सा हज़रत हाजी साहब रह0 के सामने अर्ज़ किया कि एक बुज़ुर्ग इस तरह से फरमा रहे हैं, जिनसे मेरी इस इस तरह मुलाक़ात हुई थी। आप फरमाइए मुझे क्या करना चाहिए? हाजी साहब ने कहा वह शैतान है जो तुम्हारी तालीम को महदूद करना चाहता है ताकि तुम न इधर के रहो न उधर के रहो। लेकिन चूंकि लड़का भी उन बुज़ुर्ग के हुलिए को देख कर मरऊब हो चुका था और यह समझ रहा था कि उन्होंने एक अच्छी चीज़ के हासिल करने का मशवरा दिया है, लिहाजा उसमें कुछ ग़लत नहीं हो सकता। उसने यह सब बातें सोच कर हज़रत हाजी साहब का मशवरा न माना बल्कि हिफ्ज़ करना शुरु कर दिया, नतीजा यह हुआ कि हिफ़्ज़ में न चल सका और ज़ेहनी उलझन की वजह से पागल तक हो गया। मालूम हुआ इन सब चक्करों में पड़ना एक मोमिन को ज़ेबा नहीं देता कि वह उसी में उलझा रहे कि फलां बुज़ुर्ग इस वक़्त ज़माने का मौजूअ़ बने हुए हैं, बल्कि अस्ल यह देखना ज़रूरी है कि मुत्तबअ़े सुन्नत कौन है? और अगर किसी शख़्स पर ज़रा भी यह शुब्हा हो कि यह सुन्नत के बरख़िलाफ है तो उससे एहतिराज़ बरतना चाहिए, इस लिए कि कुरआन करीम में इरशाद है तर्जुमा ''सच्चे लोगों की सुहबत इख़्तियार करो'' इस लिए कि सुहबत का असर लाज़्मी तौर पर इंसान की तबीअ़त पर पड़ता है, लिहाज़ा अगर कोई शख़्स झूठों की सुहबत में रहेगा तो झूठ बोलने का आदी होगा जो कि शिर्क के बाद सबसे बड़ा गुनाह है, और सच्चों की सुहबत में रहेगा तो सिद्दीक़ बनेगा जो कि नुबुव्वत के बाद सबसे बड़ा मक़ाम है।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 को सिद्दीक़ इसी लिए कहा जाता है कि आप ही वह वाहिद शख़्स हैं जिनको दीन के मुअ़ामले में कभी भी कोई शक पेश ही नहीं आया, यानी न उनकी ज़ुबान अटकी और न दिल खटका, इसी लिए आप सिद्दीक़ के मक़ाम पर फाइज़ हो गये। यहीं से यह भी मालूम हुआ कि जो सिद्दीक़ होता है उसको न शक होता है और न ही खटक पैदा होती है।

❖❖❖

मायूसी नहीं! अपने मक़ाम की शनाख़्त और ख़ुदा की ज़ात पर एअ़तिमाद

—मौलाना शमसुल हक़ नदवी

—हिन्दी लिपिः उबैदुल्लाह मतलूब

हज़रत मूसा अलै0 मिस्र के तारीक़ और घुटे हुए माहौल में पैदा हुए, जो उनकी क़ौम बनी इस्राईल को पूरे तौर पर घेर हुए था, और उनके लिए ज़ुल्म व ज़ियादती के उस ज़ालिमाना माहौल से निकलने के तमाम रास्ते बन्द थे। हालात मायूसकुन, तादाद थोड़ी, वसाइल मअ़दूम, क़ौम बे वक़अ़त, दुश्मन ज़ालिम व ज़बरदस्त, न कोई उनकी हमदर्दी करने वाला था, न ज़ुल्म व ज़ियादती के उस माहौल से निकालने वाला।

उन्हीं हालात में मूसा अलैहिस्सलाम पैदा होते हैं, फिरअ़ौन ने चाहा कि वह न पैदा हों, मगर पैदा हो कर रहे, और इतना ही नहीं बल्कि उसी के शाही महल में पले बढ़े, जवान हुए, फिर ऐसे ह़ालात में पैदा हुए कि मिस्र से भागना पड़ा, और कारसाज़े ह़क़ीक़ी अल्लाह रब्बुल आ़लमीन ने उनको क़रीबी मुल्क 'मदयन' में हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के पास पहुंचा दिया, और उन्होंने अपनी एक लड़की से एक मुद्दत ख़िदमत गुज़ारी के इवज़ उनका निकाह़ कर दिया। मुक़र्ररा मुद्दत पूरी करने के बाद फिर मिस्र के लिए रवाना होते हैं। रास्ते में वह आग की तलाश के लिए निकलते हैं और ऐसा नूर पाते हैं जिसके ज़रिये मज़लूम बनी इस्राइल की क़िस्मत चमक जाती है। वह मंसबे नुबूव्वत से सरफराज़ हो कर फिरअ़ौन के ख़दमो ह़शम से भरे हुए दरबार में दाख़िल होते हैं। मुजरिम की हैसियत से भागे थे लेकिन वह फिरअ़ौन और फिरअ़ौनियों को अपनी दावत व ईमान और हुज्जतो बयान से मग़लूब कर लेते हैं। फिरअ़ौन जादूगरों की मदद से एअ़जाज़े मूसवी को दबाना चाहता है, लेकिन जादूगर नाकाम हो जाते हैं, और बे इख़्तियार बोल उठते हैं कि "हम रब्बुल आ़लमीन रब्बे मूसा व हारून पर ईमान लाए"। बनी इस्राईल मिस्र से निकलते हैं, फिरअ़ौन अपने लाव लश्कर के साथ पीछा करता है और सजा सजाया पूरा मुल्क छोड़ कर उसी दरिया में डूब जाता है, जिसने बनी इस्राईल को रास्ता दे दिया था।

इन्सानी तारीख़ और खुद इस्लामी तारीख़ में बारहा ऐसे वाक़िआत पेश आते रहे हैं, और ख़ालिक़े काइनात ने एक मुद्दत तक जितना उसकी हिकमत का तक़ाज़ा था, ज़ालिमों को मोहलत दे कर इस तरह नेस्त व नाबूद किया है जिसका तसव्वुर हैरत में डाल देता है।

शेष पृष्ठ .....38 पर

नमाज़ का महत्व

—नसीम ग़ाज़ी

हमें और सम्पूर्ण जगत को सर्वशक्तिमान ईश्वर ने पैदा किया है। जीवन—यापन के लिए हमें जितनी चीज़ों की आवश्यकता है उन सभी को उसी ने जुटाया है। जीवन और मृत्यु उसी के हाथ में है। वही पालनहार है। जीविका उसी के दिए मिलती है। विनती और प्रार्थनाओं का सुनने वाला और मुसीबत में मदद करने वाला वही है। वास्तव में उसके सिवा कोई हमें लाभ या हानि पहुंचाने की शक्ति नहीं रखता। दुन्या में जो कुछ है उस का वास्तविक स्वामी ईश्वर ही है। वास्तविक शासक भी वही है। दुन्या का यह कारखाना उसी के चलाए चल रहा है। उस सर्व शक्तिमान ईश्वर का कोई साझीदार नहीं न उसके अस्तित्व में, न उसके गुणों में और न उसके अधिकारों में। मरने के बाद हमारी जीवन का हिसाब भी वही लेगा और कर्म के अनुसार बदला देगा। हम मनुष्यों के मार्ग दर्शन और पथप्रदर्शन के लिए ईश्वर ने अपने सन्देष्टा और पैगम्बर भेजे। इन पैग़म्बरों ने ईश्वर के आदेशानुसार लोगों को जीवन जीने का ढंग बताया। इन सभी पैग़म्बरों की शिक्षा एक ही थी। ईश आज्ञापालन और समर्पण। हमारे पालनहार अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपना अन्तिम सन्देष्टा बना कर भेजा और उनके द्वारा कुरआन रूपी ग्रंथ प्रदान कर के हमारे पूर्ण मार्गदर्शन और पथ—प्रदर्शन की व्यवस्था की। इसी मार्गदर्शन का नाम इस्लाम है। 'इस्लाम' नाम किसी व्यक्ति विशेष, किसी देश या किसी अन्के नाम पर नहीं, बल्कि अपने विशेष गुणों के कारण रखा गया है। इस्लाम का शाब्दिक अर्थ होता है 'आज्ञापालन और समर्पण'। इस्लाम वास्तव में नाम है स्वयं को ईश्वर के प्रति समर्पित करने और उसके आदेशों का स्वेच्छा पूर्वक पालन का। इस्लाम की मूल शिक्षा यह है कि बन्दगी और आज्ञापालन केवल ईश्वर ही का किया जाए। ईश्वर ही को अपना उपास्य बनाया जाए, उसी की पूजा और उपासना की जाए। किसी अन्य के आगे अपना सिर न झुकाया जाए और सम्पूर्ण जीवन प्रेमपूर्वक ईश्वर की दासता और उसके आज्ञापालन में व्यतीत हो।

इन बातों को हमेशा याद रखने, ईश्वर की दासता का कर्तव्य निभाने, उसके उपकारों पर आभार व्यक्त करने, ईश्वर के सामने अपनी दासता का प्रदर्शन करने तथा ईश्वर की महानता और सत्ता को स्वीकार करने की अभिव्यक्ति के लिए इस्लाम ने जो उपासना—पद्धति निर्धारित की है उसमें सबसे महत्वपूर्ण उपासना 'नमाज़' है। नमाज़ का महत्व और उसकी आवश्यकता का उल्लेख ईश्वरीय ग्रन्थ कुरआन और पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के कथनों (हदीसों) में बहुत ज़ियादा हुआ है। दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़नी इस्लाम के प्रत्येक अनुयायी (स्त्री और पुरुष) के लिए अनिवार्य है। इस्लाम में किसी अनुयायी के लिए नमाज़ का छोड़ना अधर्म ठहराया गया है। सच्ची बात तो यह है कि नमाज़ के बिना इस्लाम का अनुयायी होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

जारी.....

दारुल उलूम नदवतुल उलमा के एक बड़े और बुजुर्ग उस्ताज़ मौलाना बुरहानुद्दीन संभली का इन्तिक़ाले पुर मलाल

—मौलाना मु0 गुफ़रान नदवी

इल्मी दीनी हलक़ों में यह ख़बर बहुत अफसोस के साथ सुनी गईकि नदवे के एक बड़े और पुराने उस्ताज़ मौलाना बुरहानुद्दीन संभली का एक लंबी बीमारी के बाद 17 जनवरी 2020 ई0 जुमे के रोज़ इंन्तिक़ाल हो गया ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' दूसरे दिन सनीचर के रोज़ बाद जुहर असातिज़ा और तलबा के एक बड़े मजमे (जन समूह) की मौजूदगी में लखनऊ, डालीगंज के क़ब्रिस्तान में तदफ़ीन अमल में आई, मौलाना ने प्रारंभिक शिक्षा अपने वतन संभल में हासिल की, उसके बाद आला तालीम मुल्क की मशहूर दर्सगाह दारुल उलूम देवबन्द से हासिल की, जहां मौलाना ने मुल्क के नाम वर और बाकमाल उलमा की शागिरदी अख़तियार की और बड़ी मेहनत और लगन से तालीम मुकम्मल की जिसके नतीजे में एक योग्य और कामयाब उस्ताज़ बने, मौलाना के हज़ारों शागिर्द देश विदेश में फैले हुए हैं। वह शागिर्द मौलाना को आज भी इज़्ज़त और महब्बत के साथ याद करते हैं, मौलाना मरहूम ने दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ में पचास साल से ज़ियादा दर्स—तदरीस (पठन पाठन) के फ़राएज़ अनजाम दिये। मौलाना के ख़ास मौज़ूअ (विषय) तफ़सीर, हदीस, फिक्ह (इस्लामिक विद्वान) थे। मौलाना आलइण्डिया मुस्लिम प्रसनल लॉ बोर्ड के प्रारम्भिक सदस्य थे। इसके अलावा मजलिस तहक़ीक़ात शरीअः दारुल उलूम नदवतुल उलमा के सद्र थे, इसके साथ आलइण्डिया फ़िक़्ह एकेडमी के नाएब सदर थे। मौलाना के उस्ताज़ों में मुल्क के नामवर आलिमे दीन जंगे आज़ादी के क़ाइद शेख़ुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह0 और मोहतमिम दारुल उलूम देवबन्द हकीमुल इस्लाम क़ारी तैय्यब साहब रह0 जैसे नामवर और बाकमाल उस्ताज़ थे। अल्लाह तआला उन सब पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाये। मौलाना एक अच्छे वाइज़ (उपदेशक) और मुक़र्रिर भी थे बड़े दिलनशीं और इल्मी अन्दाज़ में अपनी बात करते थे, तफ़सीर, हदीस, फ़िक़्ह पर मौलाना की गहरी नज़र थी। मौलाना अच्छे हाफ़िज़े कुरआन और क़ारी थे। दारुलउलूम नदवतुल उलमा की मस्जिद में बहुत दिनों तरावीह में कुरआन पाबन्दी से सुनाते रहे।

मौलाना की ज़िन्दगी बहुत उसूलों के साथ थी, हमेशा तालीमी घन्टों में वक़्त पर पहुंचना और पूरी तैयारी के साथ जाना, इसी तरह हर नमाज़ वक़्त पर जमाअत के साथ अदा करना ज़रूरी था, इस नियम में सर्दी गर्मी की वजह से कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। मौलाना देश विदेश की कांफ्रेंसों और सेमिनारों में शिरक़त करते और तहक़ीक़ी मकाले पेश करते। मौलाना बहुत सी किताबों के लेखक थे, उनकी सूची बहुत लम्बी है, बड़ी अहम किताब ''मुआशरती मसाएल दीने फ़ितरत की रौशनी में'', इसी प्रकार दूसरी किताब ''रूयते हिलाल (चन्द्र दर्शन) मौलाना के बहुत से ज्ञानात्मक निबन्ध समय समय पर देश के मुख्य पत्रिकाओं में छपते रहे जिन का संकलन "गुलदस्त–ए–इल्म व नज़र'' के नाम से छपा है।

मौलाना मरहूम के दअ़वती और तअ़लीमी कामों में शहर लखनऊ में दर्से कुरआन का हलक़ा था, यह दर्से कुरआन सय्यद सिद्दीक़ हसन मरहूम आई0सी0एस0 के मकान पर होता था जहाँ किसी ज़माने में साबिक़ शेखुल तफ़सीर मौलाना मु0 उवैस नदवी नगरामी का दर्स कुरआन होता था, इस दर्स कुरआन की ख़ास बात यह थी कि यहाँ सरकारी नौकरियों में काम करने वाले पढ़े लिखे मुसलमान और ऊँचे अधिकारी होते थे।

मौलाना बुरहानुद्दीन संभली रह0 एक बड़े आलिमे दीन थे पूरी ज़िन्दगी दीन की खिदमत करते रहे, अपनी इन ख़िदमात के साथ अपने रब के पास हाज़िर हो गये, जिसके सिले (प्रतिफल) में इनशाअल्लाह आलमे आख़िरत में उनका बड़ा मुक़ाम और मरतबा होगा।

❖❖❖

खिलाफते राशिदा.....

ज़िम्मियों के अधिकारः–

ज़िम्मी उन ग़ैर मुस्लिमों को कहते हैं जिनकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा इस्लामी हुकूमत पर होता था और इस वजह से उनसे जिज़या (टैक्स) लिया जाता था। मुसलमानों के ज़िम्मे कई टेक्स थे ज़िम्मियों से सिर्फ दस दिरहम सालाना लिये जाते थे और यह टेक्स भी बूढ़े अपाहिज और मुफ़लिस निर्धन ज़िम्मियों को माफ़ था। बल्कि ऐसे लोगों को बैतुल माल से गुज़ारा मिलता था। ''हीरह'' अरबद्वीप के लोग ईसाई थे। उनके साथ जो अहदनामा हुआ था उसके कुछ वाक्य निम्नलिखित हैंः–

उनकी ख़ानकाहें (मठ) और गिरजे ढाये नहीं जायेंगे।

कोई ऐसा क़िला या भवन तबाह नहीं किया जायेगा, जिसमें वह ज़रूरत के समय पनाह ले कर बैठते थे।

नाक़ूस (घण्टे) बजाने की मुमानिअत न होगी।

वह अपने त्योहारों और जुलूसों में ''सलीब'' ले कर निकलने से रोके नहीं जायेंगे।

❖❖❖

देश के सभी देशवासियों के धार्मिक प्रथा, नागरिक जीवन के अधिकार

—मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी —हिन्दी अनुवादः फ़ौज़िया सिद्दीक़ा

हम को यह भी दृष्टिकोण सामने रखना है कि देश की नीति (पॉलिसी) में कोई बड़ा परिवर्तन लाने के लिए सत्ता के उत्तरदायी कोई योजना बनाएं तो उसमें जो समस्याएं आयें उन का समाधान देश के विभिन्न धर्मों तथा कलचरों की सीमाओं में रह कर ही किया जा सकता है, एवं यह कि अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के प्रभाव से पूर्णतः बाहर नहीं हो सकते, इस परिस्थिति को सामने रखते हुए भी हम को हालात पर नज़र रखना है, और किसी ध्यानयोग्य समस्या के आ जाने पर जिस प्रगति की (इक़्दाम) आवश्यकता हो, उसको भली कूटनीति तथा दूरदर्शिता के साथ अपनाना है। सत्ता की डोर जिन हाथों में हो, उनके सामने यह बात स्पष्ट करना है कि संविधान के आधार पर मुसलमानों का जो नागरिक अधिकार है, उनको लोकतांत्रिक तथा संवैधानिकता के आधार पर प्रदान करना है। संविधान के अनुकूल नागरिकों के धार्मिक तथा नागरिक अधिकारों को प्रदान करना सत्ता के उत्तरदायियों पर अनिवार्य है, तथा मुसलमान भारत के नागरिक होने के नाते अपने धार्मिक अधिकारों को प्राप्त करने का पूरा प्रयास करेंगे, यदि सत्ता के उत्तरदायियों की ओर से न्याययोचित तथा भ्रातृभाव विधि द्वारा उनको यह अधिकार प्रदान कर दिये जायें तो पारस्परिक प्रेम और उदारता बढ़ेगी तथा देश की एकता को लाभ पहुंचेगा, और यह देश के हित में भी होगा कि इतनी बड़ी अल्पसंख्यक जो देश की जनसंख्या का पाँचवां भाग होने के लिहाज़ से बीस करोड़ से कम नहीं, इतनी बड़ी संख्या का सहयोग प्रसन्नचित्त के साथ न हो तो देश भली भांति उन्नति नहीं कर सकता।

अतः बहुसंख्यक तथा अल्पसंख्यक के बीच जो भ्रातृभाव संबंध है उसके आधार पर जो अधिकार बनते हैं उनका प्रदान करना देश के उत्तरदायियों पर पूर्णतः लागू होती है।

❖❖❖

मायूसी नहीं!.....

हमारा काम यह है कि हालात बदलने के लिए संजीदा व बावक़ार तरीक़—ए—कार इख़्तियार करने के और अपने आमाल को इस्लामी सांचे में ढालने के साथ साथ उस ख़ुदाए पाक व बरतर, जब्बार व क़हहार, क़ादिरे मुतलक़ की तरफ़ रुजूअ़ करें और उससे दुआ़ओं का एहतिमाम करें जिस के क़बज़ए क़ुदरत में पूरा निज़ामे काइनात है, और जो एक लफ़्ज़े 'कुन' से आन की आन ही नक़शा कुछ से कुछ बदल सकता है।

(उर्दू तामीरे हयात 10 जनवरी 2020 से ग्रहीत)

❖❖❖

हुक़ूक़ का बयान

—सईदा सिद्दीक़ा फ़ाज़िला

बड़ा भाई:-

हदीस की रू से बड़ा भाई मिस्ल बाप के है इसलिए मालूम हुआ कि छोटा भाई मिस्ल औलाद के है। पस उनके आपस में वैसे ही हुक़ूक़ होंगे जैसे माँ—बाप और औलाद के हैं इसी तरह बड़ी बहन और छोटी बहन को समझ लेना चाहिए।

क़राबत दारों के हुक़ूक:-

(1) अपने सगे अगर मुहताज हों और खाने कमाने की कुदरत न रखते हों तो गुंजाइश के मुवाफ़िक़ उनकी ख़बरगीरी रखें। उनके साथ एहसान और रिआयत से पेश आये।

(2) और गाह गाह उन से मिलता रहे।

(3) उनसे क़तआ क़राबत न करे बल्कि अगर किसी क़द्र उनसे तकलीफ भी पहुंचे तो सब्र अफ़ज़ल है।

जो हुक़ूक़ सिर्फ़ आदमी होने की वजह से हैं:-

(1) बे ख़ता किसी को जान व माल की तक़्लीफ़ न दे।

(2) बे वजह शरई किसी के साथ बद ज़ुबानी न करे।

(3) अगर किसी को मुसीबत और फ़ाक़ा और मर्ज़ में मुब्तला देखे तो उसकी मदद करे, खाना दे दे। इलाज मुआलिजा कर दे।

(4) जिस सूरत में शरीअत ने सज़ा की इजाज़त दी है उसमें भी ज़ुल्म व ज़ियादती न करे।

जानवरों के हुक़ूक:-

(1) जिस जानवर से कोई फायदा न हो उसको क़ैद न करे ख़ास कर बच्चों को आशियाना से निकाल लाना उनके (उस जानवर के) माँ—बाप को परेशान करना बड़ी बे रहमी है।

(2) जो जानवर खाने के क़ाबिल न हो उनको महेज दिल बहलाने के लिए क़त्ल न करे।

(3) जो जानवर अपने काम में हैं उन के खाने पीने व राहत रसानी व खिदमत का पूरे तौर से एहतिमाम करे। उनकी ताक़त से ज़ियादा उन से काम न ले उनको हद से ज़ियादा न मारे।

(4) जिन जानवरों को ज़बह करना हो उसे तेज़ औज़ार से जल्दी काम तमाम कर दें उस को तड़पाएं नहीं। भूखा प्यासा रख कर जान न ले।

◆◇◆

अनुरोध

अगर आपको "सच्चा राही" की सेवाएं पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि "सच्चा राही" के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।

(संपादक)

तीन तलाक़ें यकजा देना —इदारा

बीवी से गर नहीं है बनती
मेल की सूरत नहीं है दिखती

बीवी को दो एक तलाक़
नहीं कहो तुम तीन तलाक़

तीन तलाक़ें यकजा देना
बहुत बुरा है ऐसा करना

जिसने भी यह हरकत की है
बड़ी हिमाक़त उसने की है

करें हम उसका बाईकाट
करें हम उसको बाहर टाट

न खायें हम दावत उसकी
नहीं करें हम इज़्ज़त उसकी

ग़लती की है माने ये वो
बुरा किया है जाने ये वो

रब से अपने माँगे मुआ़फी
क़ौम से भी वह माँगे मुआ़फी

मगर तलाक़ें ख़त्म न होंगी
तीन रहें या एक रहेगी

फतवा याँ मुफ़्ती का होगा
माने हुए आ़लिम का होगा

शासन ने जो हुक्म दिया है
संविधान के विरुद्ध किया है

शासन ने यह करम किया है
हक़ दस्तूरी छीन लिया है

मुतल्लक़ा की बात करें अब
नहीं हैं भूले उसको हम सब

मुतल्लक़ा गर हुई ग़रीब
उसके क़रीबी हुए ग़रीब

मुतल्लक़ा की मदद करेंगे
उसकी किफालत मिल के करेंगे

मिल कर देंगे उसको संभाला
मदद करेगा अल्लाह तआ़ला

रब खोलेगा रस्ता उसका
मिलेगा उसको नफ़्क़ा उसका

लेकिन शौहर सज़ा यह पाए
तीन साल को जेल वह जाए

ऐसा करना बहुत बुरा है
ऐसा करना नहीं रवा है

छोटे हों गर बच्चे उसके
कौन रहेगा पीछे उन के

ख़र्चा उनका कहाँ से आए
माँ बेचारी कहाँ से लाए

माँ तो ख़ुद मुहताज हुई है
मदद की वह मुहताज हुई है

सज़ा काट कर शौहर आए
दिल उनसे अब कौन मिलाए

सज़ा मिली है शौहर को
नहीं है राहत औरत को

करे हुकूमत इस पर ग़ौर
इस में राहत है किस तौर

कहते हैं देगी सरकार
साल में पूरे 6 हज़ार

सोलह रूप्ये पर दिन होंगे
क्या ये राहत के दिन होंगे

Nadwatul Ulama
P.O. Box No. 93, Tagore Marg,
Lucknow - 226007 (India)

ندوة العُلمـــــاء
ص.ب. ۹۳/، تیغور مارغ،
لکناؤ-۲۲۶۰۰۷ یوبی (الہند)

*Date*__________   التاریخ__________

09/09/2018   ۲۸/ذی الحجہ ۱۴۳۹ھ

باسمہ تعالیٰ

अपील बराए तामीर जदीद हास्टल

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमत में लगा हुआ है, दारूल उलूम में इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़ते हैं, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो जाती है। इस सूरतेहाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधक कमेटी ने नये छात्रावास के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसका संगे बुन्याद हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम के दस्ते मुबारक से रखा जा चुका है, और अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्ज़िला होगा, 36 कमरे और 2 हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा संबन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें और वह संतुष्टि होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

इस निर्माण कार्य पर 3,61,74,600 (तीन करोड़, एक्सठ लाख, चौहत्तर हज़ार, छः सौ) रूपये, और एक कमरे पर लगभग साढ़े चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले खैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे।

हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुंचेगा।

मौलाना तकीयुद्दीन नदवी	प्रो0 अतहर हुसैन	मौ0 सईदुररहमान आज़मी नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)	(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)	(मोहतमिम दारूलउलूम, नदवतुल उलमा)

चेक / ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।

NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733 (IFSC CODE - SBIN0000125)
(State Bank of India Main Branch, Lucknow.)

और इस पते पर भेजें।

NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW - 226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741316, Guest House: 2740141, Fax: 2741023
e-mail: nadwa@sancharnet.in, website: www.nadwatululama.org

उर्दू सीखये —इदारा

हिन्दी की मदद से उर्दू पढ़ये

वही होता है जो मंजूरे ख़ुदा होता है
وہی ہوتا ہے جو منظور خدا ہوتا ہے

यक़ीं मुह़कम, अ़मल पैहम महब्बत फ़ातिहे आ़लम
जिहादे ज़िन्दगानी में हैं यह मर्दों की शमशीरें
یقین محکم، عمل پیہم، محبت فاتح عالم
جہادِ زندگانی میں ہیں یہ مردوں کی شمشیریں

अर्थः दृढ़ विश्वास लगातार प्रयास, जग विजई प्रेम जीवन के प्रयास में यही मर्दों की तलवारें अर्थात हथियार हैं

दाना तुझे है फिक्र क्या आज नहीं तो कल सही
कैसे जुदा रहे गा वह जिस से मिला रहे गा तू
دانا تجھے ہے فکر آج نہیں تو کل سہی
کیسے جدا رہے گا وہ جس سے ملا رہے گا تو

न घबरा जोशे तूफ़ां से ख़ुदा पे छोड़ कशती को
पहुँच ही जाएंगे ऐ दिल अगर क़िस्मत में साहिल है
نا گھبرا جوشِ طوفاں سے خدا پے چھوڑ کشتی کو
پہونچ ہی جائیں گے اے دل اگر قسمت میں ساحل ہے

जवानी आदमी की माययेे इल्ज़ाम होती है
निगाहे नेक भी इस उम्र की बदनाम होती है
جوانی آدمی کی مایۂ الزام ہوتی ہے
نگاہِ نیک بھی اس عمر میں بدنام ہوتی ہے

RNI No. UPHIN/2002/795
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2018 To 2020
Dispatch Date :1&5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 19 - Issue 01

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No.: 2582-4007
http://www.nadwatululama.org
E-Mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE

Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Designed By Saleh Mahmood, Lko. Mobile : 7860632916